सत्र योजना

बच्चों के बारे में

समय : २ घण्टा

उपविषय : (क) बच्चों के प्रति नज़रिया
(ख) बच्चों की प्रवृत्तियाँ/पसन्द
(ग) बच्चों का सीखना
(घ) बच्चों के दृष्टिकोण को समझना।

सामग्री : चार्ट, स्केचपेन, चर्चापत्र।

तरीका : पहले छोटे समूह में, उसके बाद बड़े समूह में चर्चा पत्र के बिन्दुओं पर उपविषयों के अनुसार चर्चा करायी जायेगी।

(क) बच्चों के प्रति नज़रिया : इस विषय पर चर्चा के बाद यह गतिविधि करायी जाय। बच्चों की जानकारी/पूर्वज्ञान को समझने के लिए **'कंकड़ों' से घड़े को भरवाया जाय**। परन्तु यह ध्यान रहे कि खाली घड़े पर चर्चा बिन्दु अथवा उसके साथ ही जब उचित लगे इसे कराया जाय।

(ख) बच्चों की प्रवृत्तियाँ/पसन्द : बच्चों की पसन्द पर आधारित चर्चापत्र के बिन्दु–४ पर चर्चा के बाद। गतिविधि **– बच्चों को क्या अच्छा लगता – जल्दी बोल–जल्दी बोल** के माध्यम से कराया जायेगा। प्रतिभागियों द्वारा बताये जाने पर चार्ट पर अंकन होगा। फिर गतिविधि के पश्चात कक्षा/विद्यालय में उनकी उपलब्धता/अनुपलब्धता में वर्गीकृत किया जाय। इस अवधि में निम्न चर्चा बिन्दुओं पर चर्चा कराकर व बच्चों के बारे में समझ तक पहुँचने का प्रयास किया जायेगा।

- क्या अनुपलब्ध को हम अपनी कक्षा में ला सकते हैं ? कैसे ?
  (संकेत– गतिविधि/खेल/चित्र/कहानी/हावभाव आदि)
- आप अपने बचपन की पसन्द/नापसन्द को याद करें, और बतायें।

(ग) बच्चों का सीखना : चर्चापत्र –१ के बिन्दुओं २, ३, ५, ६ पर चर्चा के माध्यम से ।

(घ) बच्चों के दृष्टिकोण को समझना : चर्चापत्र के बिन्दुओं पर चर्चा के बादउसके साथ–साथ निम्नलिखित बिन्दुओं पर भी बड़े समूह में चर्चा के माध्यम से।

- बच्चा जब कक्षा में पहली बार आता है तो उसके प्रति शिक्षक का क्या अपना कोई नज़रिया होता है ?
- क्या उस नज़रिये में कुछ परिवर्तन जरूरी लगता है ?
- यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों ?

सावधानियाँ :

- प्रशिक्षक अपने विचार प्रतिभागियों पर न थोपें।
- प्रतिभागियों को अपने विचार अधिक से अधिक व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया जाय।
- "खाली घड़े" वाली गतिविधि कराते समय प्रतिभागियों से बच्चों की जानकारी/पूर्वज्ञान के विषय में पूछा जाय। जैसे–जैसे प्रतिभागी बताते जायें प्रशिक्षक चार्ट/बोर्ड पर बने घड़े में कंकेड़ों का संकेत देकर भरने का काम करें।
- यदि सभी प्रतिभागी किसी बिन्दु पर तुरन्त सहमत/एकमत हो जायें तब भी तर्क के साथ चर्चा को आगे बढ़ायें।

✪✪✪✪

चर्चा पत्र – १

विश्वास व मान्यतायें – बच्चों के बारे में

१. बच्चा है–

(क) एक खाली बर्तन जिसे भरना है।

(ख) गीली मिट्टी जिसे आकार देना है।

(ग) पौधा जिसे पानी देना है।

(घ) कच्ची मिट्टी का घड़ा जिसे पकाना है।

कृपया एक चुनिये और कारण भी बतायें।

२. पहले ८ साल में बच्चे जो सीखते है, वे हमेशा के लिए ग्रहण कर लेते है बाद में बदलना मुश्किल होता है।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

३. बच्चे आसपास खोजबीन कर सकते है और बहुत कुछ पता कर सकते हैं।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

४. बच्चे तरह–तरह की वस्तुओं से खेलना पसन्द करते हैं और इससे बहुत कुछ सीखते हैं।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

५. बच्चे आपस में मिलकर समूह कार्य कर सकते हैं और इससे बहुत कुछ महत्वपूर्ण चीजे सीख सकते हैं।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

६. बच्चे खुद करने से ज्यादा सीखते है और नकल से कम।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

७. बच्चे शरारती प्रकृति के होते हैं उन्हे अनुशासन सिखाना पड़ता है।
सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों

✪✪✪✪

सत्रयोजना

सीखने की प्रक्रिया

क्रम : १

समय : १:३० घंटा

उपविषय :
- सीखने में रुचि, इच्छा
- सीखने में अभ्यास
- सीखने में सफलता

सामग्री : एक किताब, एक स्टूल या कुर्सी, और चर्चापत्र

तरीके / विधियाँ : गतिविधि और चर्चा

- **'मुझे छुओ तो जानूँ'** गतिविधि द्वारा शुरुआत की जाएगी।
- प्रतिभागी मेज पर रखी पुस्तक को आँख बन्द कर छूने का प्रयास करेंगे।
- गतिविधि करनें में असफल और अर्धसफल लोगों को प्रशिक्षक कुछ मौके फिर देंगें। संभव है उनमें कुछ लोग गतिविधि पूरी करने में सफल हो जाएं। इसके बाद गतिविधि के अनुभवों पर इस प्रकार चर्चा कराई जा सकती है –
- गतिविधि के दौरान कैसी अनुभूतियाँ हुईं ?
- जो किताब छू सके उनके अनुभव।
- जो नहीं छू सके उनके अनुभव।
- जो छूने के करीब थे पर नहीं छू सके–उनके अनुभव।
- जिन्हें दुबारा मौका दिया गया– उनके अनुभव।

१. प्रेरक / प्रशिक्षक चर्चा इस प्रकार कराएंगें कि उसमें प्रतिभागियों की सफलता, असफलता और अर्धसफलता के कारण उभरें।

(गतिविधि और चर्चा के लिए समय –५० मिनट)

२. गतिविधि पर चर्चा के बाद छोटे समूह बनाकर चर्चा पत्र बाँटें फिर बड़े समूह में बातचीत / बहस कराई जाएगी

(छोटे समूह में चर्चा– १५ मिनट)
(बड़े समूह में चर्चा– २५ मिनट)

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :

यदि प्रतिभागी – कहीं शिथिल / ढीले पड़ते नजर आते हैं तो–प्रशिक्षक अपने पास की रोचक जानकारियों से उन्हें उत्साहित करें। इसके लिए वे तैयारी रखें।

✪✪✪✪

चर्चा पत्र : सीखनें की प्रक्रिया

सत्र – एक

१. सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सहमति लेना जरूरी है।
   सहमत / असहमत / कुछ–कुछ सहमत / क्यों ?
२. बच्चे जब चलना और बोलना सीखते हैं तो उन्हें कैसे–कैसे अनुभव होते होगें ? सोचें, बताएं।
३. हम कब यह मान लें कि कोई अभ्यास क्रिया या गतिविधि बच्चे ने सीख ली है ?
४. कोई क्रिया, अभ्यास या गतिविधि कक्षा के सब बच्चे एक बार में और एक ही समय में क्यों नहीं सीख लेते ? कारण बताएं।

✪✪✪✪

सत्र योजना

सीखने की प्रक्रिया

क्रम : २

समय : १:३० घण्टा

उपविषय :
- सीखने में कठिनाइयाँ
- सीखने में मददगार चीजें
- सीखने में मूल्यांकन

तरीके / माध्यम : नकल लिखना, सुनकर लिखना, कहानी बनाना व चर्चा

१. प्रशिक्षक प्रतिभागियों से चार्ट पर पहले से ही नीचे लिखे पैराग्राफ को अपनी कापी में उतारने के लिए कहेंगे।

''आज बह्मा के दिन के दूसरे परार्ध में श्वेतवाराह कल्प में वैवस्वत मन्वन्तर में अट्ठाइसवें कलियुग के प्रथम चरण में जम्बूद्वीप में, भारतवर्ष में, आर्यावर्त प्रदेश में, पुण्यक्षेत्र में, वर्तमान बौद्धावतार के समय में जो भी विक्रम संवत्सर हो, जो भी माह हो, उस शुभ माह में उसका जो भी पक्ष हो, उसमें जो भी तिथि हो, उसमें जो भी वार हो, नक्षत्र हो, जो भी राशि का योग हो उसमें संकल्पकर्ता अपने गोत्र का नाम लेकर, फिर अपना नाम लेकर कहता है कि मैं अमुक कार्य करने का संकल्प करता हूँ।''

(समय ५ मिनट)

२. प्रशिक्षक निम्न पैरा बोल कर प्रतिभागियों को लिखाएंगें (श्रुतलेख)

''कितने दुर्भाग्य की बात है कि हम आज तक एक भी ऐसा स्कूल नहीं बना सके जिसमें बच्चा उत्साह से दौड़ता हुआ घर से आये। हमें माँ–बाप के रूप में अँग्रेजी की वर्णमाला, गिनती और कविता सुनाता हुआ बच्चा चाहिए। हमें इस रूप में सिर्फ अपने पैसे का रिटर्न चाहिए। हमारे शिक्षक को

अनुशासन और प्रतिशत की स्केल से नापा जाने वाला परीक्षाफल चाहिए, हमें खेलता हुआ बच्चा, उतना अच्छा नहीं लगता, जितना किताबों में माथा गाड़ कर बैठा हुआ बच्चा। खेलते–खेलते, गाते–गाते भी बच्चा सीख सकता है और बेहतर ढंग से सीख सकता है।''

(समय १० मिनट)

३. **प्रेरक / प्रशिक्षक** – इन शब्दों / पात्रों की मदद से प्रतिभागियों को अलग–अलग समूहों में बाँटकर, समूहवार एक छोटी कहानी बनानें को कहेगा।

गाँव, मदारी, साँप, नेवला, औरतें, बच्चे, मेढक

(कहानी बनाने का समय २० मिनट)

कहानी बनाकर सब प्रतिभागी बड़े समूह में इकट्ठा होंगे। हर एक समूह अपनी कहानी प्रस्तुत करेगा। कहानी की प्रस्तुति के साथ क्रमवार अन्य समूह द्वारा आलोचना / समीक्षा भी की जाएगी। प्रशिक्षक खास बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित करेगा।

(निर्धारित समय ३० मिनट)

कहानी की आलोचना / समीक्षा के बाद बड़े समूह में ही प्रतिभागियों से, क्रमशः नकल, श्रुतलेख और कहानी बनाने के अनुभवों पर चर्चा होगी। इसके संभावित बिन्दु :–

- जब चार्ट से नकल उतार रहे थे तब कैसा अनुभव हो रहा था ? क्या सोच रहे थे ?
- जब सुनकर लिख रहे थे (श्रुतलेख) तब क्या महसूस कर रहे थे ? क्या सोच रहे थे ?
- कहानी बनाते समय कैसा महसूस किया ? दिमाग में कौन–कौन सी बातें आ रही थीं ?

प्रशिक्षक को सुझाव : वह चर्चा को इस ढंग से चलाएं कि ऊपर के तीन अनुभवों – नकल लिखने, सुनकर लिखने और मिलकर कहानी बनाने का फर्क उभरे। यह बात भी उभर कर आए कि सीखने की प्रक्रिया में कौन से अनुभव बाधा पैदा करते हैं और कौन से अनुभव मदद करते हैं।

सावधानियाँ : उपरोक्त चर्चा के प्रश्नों पर, प्रतिप्रश्नों (प्रतिभागियों की संभावित बातों पर अपने प्रश्नों की रूपरेखा) की तैयारी प्रशिक्षक पहले से कर के रखें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

सीखनें की प्रक्रिया

क्रम : ३

समय : १:३० घण्टा

उपविषय :
- सीखनें में गलतियाँ।
- गलतियों के प्रति हमारा रुख
- गलतियाँ ठीक कैसे हों ?

सामग्री : चर्चापत्र, चार्ट, स्केच पेन आदि।

तरीके/माध्यम : 'रोल प्ले', चर्चा।

प्रशिक्षक/प्रेरक 'रोल प्ले' के जरिए परम्परागत ढंग से चलाई जा रही एक कक्षा का दृश्य प्रस्तुत करेंगे। इसमें वह खुद एक पुरानें ढंग के शिक्षक की भूमिका निभाएंगे।

१. प्रतिभागियों को गणित के कुछ सवाल बोलकर सामने चार्ट पर उनसे लिखाएंगे। (सवाल हल नहीं करवानें हैं)

जैसे :–

```
  ४३१        ४३३
+ ७८८      – २५२
--------   --------

--------   --------
```

कुछ प्रतिभागियों, जिन्होंनें अंकों को दाएं–बाएं लिखा है, एक सीध में नहीं लिखा, या जिनके अंकों की बनावट ठीक नहीं है, को वह हड़कानें (डाँटनें–डपटनें, या झापड़ मारनें) का अभिनय करेगा। किसी को दोनों हाथ ऊपर करके खड़े होने का आदेश देगा। सजा पाने वालों में एक दो प्रशिक्षक साथी भी अवश्य शामिल किए जाएंगें।

२. चार्ट/श्यामपट पर हिन्दी के कुछ कठिन शब्द लिखवाएंगे, जैसे – 'आत्मसाक्षात्कार', चक्रव्यूह, उन्नयन, चतुर्दिक' आदि।

कुछ लोग कुछ गलतियाँ करेंगे। प्रशिक्षक उनसे 'सख्त व्यवहार' का अभिनय करेंगे। वह किसी को तिरस्कार भरे स्वर में कहेंगे 'यह गलत है'। किसी के सही शब्द ही गुस्से में काट देंगे।

३. प्रतिभागियों से पर्यावरणीय अध्ययन में जमीन के बाहर और जमीन के भीतर रहने वाले जन्तुओं की सूची बनवाएंगे। इसमें भी उनकी गलतियाँ निकालेंगे। एक–दो गलत प्रतिभागियों को कक्षा से बाहर के लिए कहेंगे। एक को 'मुर्गा' बना देंगे।

(समय २५ मिनट)

'रोल प्ले' के बाद उस पर चर्चा कराई जाएगी। चर्चा के निम्न संभावित बिन्दु होंगे –

- गणित का सवाल लिखने में क्या गलती की गई थी ?
- इस गलती पर 'अध्यापक' ने जो रुख अपनाया, वह कैसा लगा ?
- इस गलती को बताने/एहसास कराने के और कौन–कौन तरीके हो सकते थे ?
- भाषा के शब्द लिखने में प्रतिभागियों ने क्या गलतियाँ की ?
- क्या ''प्रतिभागियों द्वारा''लिखे गए शब्दों से कही जाने वाली बात समझ में नहीं आ रही थी ?

- की गई गलती को ठीक करनें के और क्या तरीके हो सकते थे ?
- जन्तुओं की सूची बनाने में ''प्रतिभागियों'' ने जो लिखा उसमें किस प्रकार की गलती थी ?
- कक्षा में अक्षम्य गलतियाँ किस कारण से हो जाती हैं ?

  (प्रशिक्षक चर्चा में आए/उभरे खास–खास मतों को चार्ट पर नोट करेंगें)

(चर्चा के लिए समय ३५ मिनट)

चर्चापत्र पर चर्चा : 'रोल प्ले' पर चर्चा के बाद प्रशिक्षक/प्रेरक – प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर 'चर्चापत्र' पर चर्चा कराएंगे। हर एक समूह अपने निष्कर्षों को नोट करेंगे।

(समय १० मिनट)

'ग्रुप चर्चा' के बाद, हर–एक समूह के मतों/निष्कर्षों पर बिन्दुवार चर्चा होगी। समूह एक दूसरे के निष्कर्षों की समीक्षा करें। प्रशिक्षक बड़े समूह में चर्चा/बहस के निष्कर्षों को चार्ट पर लिखें।

(समय २० मिनट)

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :–

१. यह बेहतर होगा कि प्रशिक्षक/प्रेरक चर्चा तथा 'रोल–प्ले' के लिए पहले से योजना बना लें और बहस के संभावित बिन्दुओं पर अतिरिक्त जानकारी रखें।

२. बेहतर होगा कि 'मुर्गे' की भूमिका ट्रेनर अपने किसी प्रशिक्षक साथी को ही दें। यह और भी ठीक होगा कि 'रोल प्ले' में सिर्फ प्रशिक्षक ही 'भूमिका' निभायें।

✪✪✪✪

सत्र योजना – तीन

चर्चा पत्र : सीखने की प्रक्रिया

१. सीखने की प्रक्रिया और गलतियों में क्या संबंध है ? गलतियां क्यों होती हैं ?

२. जब हम खुद गलती करते हैं तब दूसरों से कैसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं ?

३. बार–बार गलतियाँ बताने से बच्चों पर कौन–कौन से प्रभाव पड़ सकते हैं ?

४. क्या बिना गलतियाँ किए सीखना सम्भव है ? सीखने–सिखाने में कौन सा तरीका अपनाया जाए कि गलतियाँ खुद ढूंढनें का मौका मिले ?

५. गलतियाँ किस रूप में ठीक करना/सुधारना ठीक रहेगा ? इसके कुछ उपाय सुझाएं।

✪✪✪✪

सत्रयोजना

शिक्षक के बारे में

समय : २ घन्टा

उपविषय : (क) शिक्षक के प्रति नज़रिया
(ख) शिक्षक के कार्य की दशायें
(ग) शिक्षक का रवैया, समुदाय, बच्चे व विषय के प्रति
(घ) समय प्रबन्धन
(च) शिक्षण विधि
(छ) पाठ्यक्रम / पाठ्यपुस्तक / विषयवस्तु की सही समझ

सामग्री : चार्ट, स्केचपेन,चर्चापत्र –२

गतिविधि समय : १५ मिनट

तरीका :

जगाने वाली किसी गतिविधि; जैसे– "क्या आप मेरे दोस्त बनेंगे" का आयोजन करने के बाद छोटे–छोटे समूहों में विभाजन करके चर्चा पत्र–२ के दो–दो बिन्दुओं पर छोटे समूह में चर्चा (२० मिनट)। फिर बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण एवं बिन्दुवार चर्चा करते रहेंगे। सहमति के विन्दुओं को साथ–साथ चार्ट पर लिखा जाएगा। चर्चा पत्र के बिन्दुओं और बीच–बीच में उठने वाली शंकाओं पर प्रति प्रश्न कर प्रशिक्षक चर्चा को अपनी बात से जोड़ते हुए आगे बढ़ायेगा। अन्त में निम्नांकित प्रश्न पूछ कर पूरी चर्चा का सार संकलन करेगा।

प्रश्न – वर्तमान समय में बच्चों और लोगों का हमारे प्रति नज़रिया क्या है ?

उक्त प्रश्न के सन्दर्भ में बहुत ही सावधानी के साथ कुछ व्यक्तिगत प्रश्न किये जायें प्रतिभागियों को मनोवैज्ञानिक तौर पर वर्तमान स्थिति का एहसास उन्हें स्वयं करने दिया जाय।

✪✪✪✪

चर्चापत्र – २

विश्वास व मान्यतायें – शिक्षक के बारे में

१. आपके मत में शिक्षक को इनमें से क्या होना चाहिए –
   (क) सुगमकर्ता (Facilitator) (ख) ज्ञानी (ग) दोस्त (घ) अन्य कोई ।

२. शिक्षक यदि काम करने लग जायें तो स्कूल की सब समस्यायें हल हो जायेंगी। सहमत / असहमत / कुछ–कुछ / क्यों ?

३. ज्यादातर शिक्षकों को कक्षा में समय प्रबन्धन में दिक्कत होती है क्योंकि –
   (क) पाठ्यक्रम ठसाठस भरा है।
   (ख) ठीक से प्लान नहीं कर सकते हैं ।
   (ग) पढ़ाने के कुल दिन कम मिलते हैं ।
   (घ) अन्य कोई (क्या, कृपया बतायें)

४. शिक्षक का किसी विषय के प्रति रवैया, बच्चों के उस विषय को सीख पाने पर असर डालता है। सहमत / असहमत / क्यों

५. स्कूल में गतिविधियाँ इसलिए नहीं होती क्योंकि शिक्षक बच्चों के साथ खेलने अथवा गतिविधि करने में झिझकते हैं। हाँ / ना / क्यों

६. कोर्स पूरा करना है तो गतिविधियों पर जोर नहीं दे सकते। हाँ / ना / क्यों

७. शिक्षक बच्चों की गलतियाँ न बतायें तो बच्चे उन्हे ठीक नहीं कर सकेगें। हाँ / ना / क्यों

सत्र योजना

गतिविधि

क्रम : १

समय : १:३० घंटा

उपविषय : गतिविधि क्या ?

उद्देश्य : "गतिविधि" के विषय में सामान्य समझ विकसित करना।

माध्यम/तरीके :

१. परंपरागत गतिविधि (**हाथ ऊपर हाथ नीचे** – ५ मिनट) इसमें प्रतिभागी निर्देश के अनुसार केवल हाथ ऊपर–नीचे करते रहेगें।

२. जगाने वाली गतिविधि (**बोल भाई कितने** – ५ मिनट) – निर्देश के अनुसार बोली गयी संख्या के अनुसार समूह बनाकर खड़े होंगे। इस गतिविधि में उन्हें शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की क्रियाएं करनी पड़ती हैं।

३. मस्तिष्क मंथन वाली गतिविधि (**वस्तु बूझो** – २५ मिनट) – आवश्कयता अनुसार छोटे समूह बना लें। बहुत सी सामग्रियाँ (१५–२०) बीच में रख लेते हैं। फिर किसी एक समूह से किसी एक वस्तु का नाम चयनित करने को कहें। दूसरे समूह का मुखिया अपने समूह के सहयोग से अधिकतम दस प्रश्न पूछकर उस वस्तु का नाम पता करने की कोशिश करेगा। जो समूह कम से कम प्रश्नों में वस्तु का नाम जानकर बता देगा, वह समूह विजयी होगा।

बड़े समूह में चर्चा (४५ मिनट)

इन गतिविधियों को कराने के बाद बड़े समूह में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी। चर्चा में उभर कर आये बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित किया जायेगा।

- यहाँ क्या हो रहा था ?
- इस दौरान कैसा अनुभव कर रहे थे ? क्यों ?
- क्या कुछ नया सीखा जा रहा था ?
- क्या कुछ नया सोचना पड़ रहा था ?
- क्या तीनों क्रियाओं में कुछ अंतर था ?
- तीनों में से कौन क्रिया आपको ज्यादा अच्छी लगी ? क्यों ?
- इन क्रियाओं को क्या कुछ नया नाम दिया जा सकता है ?

निर्देश : चर्चा के पश्चात प्रशिक्षक प्रतिभागियों से गतिविधि की अपनी परिभाषा लिखने को कहें।

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :

- प्रशिक्षक प्रत्येक गतिविधि को पूर्ण जोश–खरोश से कराये तथा जिज्ञासा, कौतूहल, रुचि बनाये रखे। प्रतिभागियों से आये महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित करें। समय सीमा का ध्यान रखे।
- परंपरागत गतिविधि के अन्य विकल्प जैसे – आँखें खोलो–बन्द करो, कदम ताल, रटाना–कहो १, २, ३,..........., बायें देखो, दायें देखो आदि का प्रयोग कर सकते हैं।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गतिविधि

क्रम : २

समय : १:३० घण्टा

उपविषय : गतिविधि के प्रकार।

उद्देश्य : गतिविधि के विभिन्न प्रकारों से परिचित कराना।

तरीका : **(४५ मिनट)**

- शारीरिक,मानसिक गतिविधि (तम्बोला, भाषाकूद)
- अभिनय/हाव–भाव/कविता (इब्नबतूता पहन के जूता)
- परिभ्रमण (परिभ्रमण में स्थानीय स्थिति को ध्यान में रखकर निर्देश दिए जायें। क्या देखना है ? समय १५ मिनट चर्चा सहित)
- सबकी कविता (होता है भई होता है ....)
- कहानी (ऑक् छीं ....)
- एकाकी गतिविधि (वर्ण देकर शब्द बनवाना)
- वस्तु एकत्र करना, ठोस वस्तुओं से कार्य (कक्षा से बाहर से पत्ती, कंकड़, तीलियां आदि)

गतिविधि का एक ओर विभाजन :
▪ मौखिक गतिविधि – अंत्याक्षरी
▪ लिखित गतिविधि – असंबद्ध शब्दों से कहानी
▪ कक्षा के बाहर/अंदर की जानेवाली गतिविधि
▪ सामूहिक गतिविधि

बड़े समूह में चर्चा (४५ मिनट)

इन गतिविधियों को कराने के बाद बड़े समूह में निम्नलिखित बिन्दुओ पर चर्चा की जायेगी। चर्चा में उभर कर आये बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित किया जायेगा।

यहाँ कितने प्रकार की गतिविधियाँ कराई गईं ?

- इनमें सीखने का कितना अंश था ?
- यहाँ शिक्षक की क्या और कितनी भूमिका थी ? वह कितने समय सक्रिय रहा ?
- बच्चों (प्रतिभागियों) की क्या भूमिका थी ?
- किस–किस सामग्री का प्रयोग किया गया ?
- क्या–क्या तैयारी की गई होगी ?
- क्या विभिन्न विषयों के लिए इस प्रकार की गतिविधियाँ की जा सकती हैं ?
- बहुकक्षीय संदर्भों में क्या यह संभव है ?

निर्देश :

प्रतिभागियों से आये विचारों को नोट करते रहें, चर्चा से उभारें कि कक्षा में इस तरह की

गतिविधियों के द्वारा और क्या–क्या सिखाया जा सकता है। उदाहरण दें। चार्ट पेपर पर यह कॉलम बना लें।

क्या सिखाना ?	गतिविधि

चार्ट पर अंकित करते रहें, बीच–बीच में पूछते जायें कि क्या यह वास्तव में गतिविधि है ? क्या आप कक्षा में इन्हें करा सकते हैं ?

विशेष :

- यह सत्र जब आप करायें तब तक विभिन्न सत्रों में अलग–अलग प्रकार की गतिविधियाँ कराई जा चुकी हों।
- इस सत्र में नमूने के तौर पर अधिकतम दो गतिविधियाँ ही करायें, चर्चा के माध्यम से उन गतिविधियों को, जो हो चुकी हैं उन्हें याद दिलाये।

✪✪✪✪

सत्रयोजना

गतिविधि

क्रम : ३

समय : १:३० घंटा

उपविषय : गतिविधि निर्माण/गतिविधि प्रस्तुत करने के विषय में जानकारी देना।

तरीका : प्रतिभागियों के समूह बनाने के पहले प्रशिक्षक स्वयं एक गतिविधि करायें। ५ या ६ के समूह बनाकर प्रतिभागियों से समूह में गतिविधि तैयार करने को कहें तथा उसका प्रस्तुतीकरण करवायें।

बड़े समूह में चर्चा

प्रत्येक गतिविधियों को कराने के बाद बड़े समूह में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी। चर्चा में उभर कर आये बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित किया जायेगा। (दो–तीन गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण)

- यह गतिविधि कैसी रही ?
- शिक्षक/बच्चों की क्या भूमिका रही ?
- सामग्री कैसे तैयार की गयी ?
- क्या कोई तनाव/बोझ रहा ?
- क्या कठिनाइयाँ रही ?
- जो गतिविधि कराई वे सफल/असफल रहीं ? क्यों ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- लाटरी सिस्टम से समूह एवं उसके सदस्य के नाम निकलवाना।
- प्रत्येक समूह से जिसका नाम निकले वह गतिविधि करायेगा।
- गतिविधि बड़े समूह में होगी।
- जिस समूह का सदस्य गतिविधि करवा रहा है उसके शेष सदस्य अवलोकन करेंगे।
- प्रशिक्षक भी प्रस्तुतीकरण के दौरान प्रतिभागी होगा।
- गतिविधि प्रतिभागियों से प्रस्तुत करवाने के उपरान्त चर्चा से उभारें कि गतिविधि के प्रबंधन में आये महत्वपूर्ण तथ्यों जैसे– बैठक व्यवस्था, निर्देश, सम्प्रेषण, समूह निर्माण, सामग्री निर्माण, समय प्रबंधन, भौतिक प्रबंधन तथा विषयों से जोड़ने की कला में उनके क्या अनुभव रहे।

प्रतिभागियों से चर्चा के बाद समूह अन्य सदस्यों से निम्नलिखित प्रश्न करें–

- क्या आपने जैसा सोचा था, गतिविधि उसी रूप में करायी गयी ?
- आपके अनुसार कौन–कौन सी कमी रह गयी ?
- इसे दूर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए था ?

✪✪✪✪

सत्र योजना

गतिविधि

क्रम : ४

समय : १:३० घंटा

उद्देश्य : गतिविधि के प्रमुख पहलुओं सें परिचित कराना।

तरीका : सत्र तीन में छोड़े गये समूहों की प्रस्तुति द्वारा उभरे बिन्दुओं पर चर्चा।

बड़े समूह में चर्चा

प्रस्तुतीकरण के बाद बड़े समूह में चर्चा में उभरकर आये बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित किया जायेगा। निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा के द्वारा बड़े समूह में निष्कर्ष तक पहुँचा जायेगा।

- क्या एक गतिविधि में सीखने के एक से अधिक अंश हो सकते हैं ?
- क्या बच्चों के स्तर के अनुसार गतिविधि को लचीला बनाया जा सकता है ?
- एक गतिविधि को कितनी बार कराया जा सकता है ?
- क्या गतिविधि में विविधता लाई जा सकती है ?
- क्या गतिविधि का ऐसा ढांचा हो सकता है जो आपके नियंत्रण में हो ? आपकी जरूरत के अनुसार ढल सके ?
- एक दक्षता के लिए क्या एक ही गतिविधि पर्याप्त है ? या कई ?
- क्या एक गतिविधि से कई दक्षताएं सीखी जा सकती हैं ?
- क्या एक गतिविधि में एक से अधिक विषयों का सहज एकीकरण संभव है ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- प्रशिक्षक दो–चार गतिविधि अपने पास अतिरिक्त रखे जिससे चर्चा के वक्त जरूरत पड़ने पर उनका उपयोग किया जा सके ।
- गतिविधि के दौरान एक बात ध्यान रहे कि सदैव अंतिम निष्कर्ष तक पहुँचना ही गतिविधि का उद्देश्य नहीं होता।
- केवल भाग दौड़ ही गतिविधि नहीं अपितु मानसिक भाग दौड़ भी गतिविधि है।
- प्रशिक्षक अपने विचार थोपने से बचे।
- प्रतिभागियों को किसी निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद करें।
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों के साथ कक्षा में गतिविधि के किसी ढांचे के प्रयोग पर भी चर्चा कर सकते हैं।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गतिविधि

क्रम : ५

समय : १ घंटा

उपविषय : गतिविधि आधारित कक्षा क्या ?
(बच्चे/अध्यापक क्या करते नजर आयें)

उद्देश्य : गतिविधि आधारित कक्षा के बारे में स्पष्ट समझ विकसित करना।

तरीका : छोटे समूह में चर्चा बिन्दु पर विचार–विमर्श इसके बाद बड़े समूह में चर्चा। सहमति के बिन्दु चार्ट पर लिखें। चर्चा एक–एक बिन्दु पर कराना ठीक होगा। समस्त चर्चा बिन्दुओं को एक चार्ट पर लिख कर टाँग दें। जिन पर प्रतिभागी छोटे समूह में आपस में चर्चा करें और निष्कर्ष निकालें।

बड़े समूह के चर्चा बिन्दु :

- गतिविधि आधारित कक्षा के बारे में अब आपकी क्या समझ है ?
- एक सामान्य कक्षा से गतिविधि आधारित कक्षा किस प्रकार भिन्न है ?
- आप किस प्रकार की कक्षा देखना चाहते हैं ?
- गतिविधि आधारित कक्षा में अध्यापक क्या करते नजर आ सकते हैं ?
- बच्चे क्या करते नजर आ सकते हैं ?
- यदि आप अवलोकन करें तो ऐसी कक्षा में क्या सुनाई दे सकता है ?
- शिक्षक की क्या भूमिका होगी ?
- बच्चों की क्या भूमिका होगी ?
- शिक्षक बच्चे के बीच कैसे संबंध होंगे ?
- बच्चों–बच्चों के बीच कैसे संबंध हो सकते हैं ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- प्रशिक्षक MOTM से गतिविधि वाला भाग प्रतिभागियों से भरने को कहें।
- ध्यान रहे इस सत्र में प्रशिक्षार्थी विद्यालय के भौतिक परिवेश का वर्णन न करने लगें।
- प्रतिभागियों को स्पष्ट कर दें कि कक्षा के अन्दर के क्रियाकलापों को उजागर करना है।
- शिक्षक बच्चों के बीच वार्तालाप संबंध, सामग्री प्रयोग, सम्प्रेषण आदि विविध तथ्यों को स्पष्ट करें।
- शिक्षण विधि के संबंध में अपने मत प्रकट करें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गतिविधि

क्रम : ६

समय : १ घंटा

उपविषय : गतिविधि आधारित कक्षा कैसे बनायें ? (शिक्षक/बच्चों की भूमिका)

उद्देश्य : गतिविधि आधारित कक्षा, के निर्माण के विषय में समझ बनाना।

तरीका : बड़े समूह में चर्चा वार्ता

बड़े समूह में चर्चा बिन्दु : चर्चा एक–एक बिन्दु पर कराना ठीक होगा। प्रत्येक बिन्दु पर सहमति से उभरे हुए सार को चार्ट पर अंकित करें।

- गतिविधि आधारित कक्षा, शिक्षक कैसे बना सकते हैं ?
- शिक्षक आपस में मिलकर गतिविधि आधारित विद्याालय में कैसे कार्य करें ?
- उत्साह, स्फूर्ति, सजगता, का वातावरण कैसे बने।
- गतिविधि के लिए सामग्री कैसे विकसित की जाये ?
- योजना/मूल्यांकन कैसे हो ?
- बहुकक्षीय संदर्भों में गतिविधि कैसे हो ?
- बहुस्तरीय संदर्भों में गतिविधि कैसे हो ?
- शिक्षक/बच्चे में संबंध कैसे हों/क्या भूमिका हो ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- प्रशिक्षक बड़े समूह में चर्चा वार्ता करते समय कुछ बिन्दुओं जैसे– मूल्यांकन, योजना, बहुकक्षीय संदर्भ, आदि को विशेष रूप से उभारें।
- MOTM का गतिविधि का शेष भाग भरने को कहें।
- प्रतिभागियों से चर्चा करें कि गतिविधि आधारित कक्षा बनाने में उन्हें किस तरह की मदद की जरूरत होगी।
- प्रतिभागियों से चर्चा करें कि गतिविधि आधारित कक्षा बनाने के लिए उन्हें और क्या करना होगा।

योजना बनाना :

प्रशिक्षणार्थी से अगले १–२ महीनों के लिए किये जाने वाले कार्यों की कार्य योजना बनवाई जायेगी।

✪✪✪✪

सत्र योजना

सामग्री

क्रम : १

समय : २ घण्टा

उद्देश्य :
- सामग्री क्या ?
- परिवेश आधारित सामग्री पर चर्चा।
- परिवेश आधारित सामग्री जुटाना और उसका पाठ में उपयोग।

तरीके : प्रशिक्षक बड़े समूह में इन बिन्दुओ पर चर्चा करायेंगे।

चर्चा बिन्दु :
- सामग्री क्या है ?
- सीखने सिखाने में सामग्री की क्या भूमिका है ?
- सामग्री कितने प्रकार की हो सकती है ?
- क्या परिवेश में मौजूद वे चीज़े जिन्हे हम स्कूल में नहीं ला सकते – भी सामग्री बन सकती है ? किस रूप में ?

चर्चा के दौरान यह गतिविधि जोड़ी जायेगी।

गतिविधि :

फूल	घर	पतंग
कपड़े	तालाब	पेड़

प्रशिक्षक सुझाव

चार्ट पर पहले से ही ऐसा कोई खाका बना लें। और उस पर बड़े समूह में चर्चा चलायें।

चर्चा बिन्दु :– उपरोक्त चार्ट पर बनाई गई सामग्री में आप किसे शैक्षणिक सामग्री नहीं मानते हैं और क्यों ?

- ऐसी कोई दो वस्तुयें बतायें जिनका प्रयोग शिक्षण सामग्री के रूप में नहीं हो सकता है ?
- सामग्री के स्रोत कौन कौन से हो सकते हैं ?
- स्वनिर्मित और परिवेश से जुटाई हुई सामग्री दोनो का महत्व, उपयोग एवं उपलब्धता।
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को परिवेश से विभिन्न सामग्री जुटाने को कहेगे। इसके लिये उन्हें छोटे–छोटे समूहो में बाँट दिया जायेगा। १५ मिनट में उन्हे अधिकतम सामग्री एकत्र करनी होगी।
- सामग्री संग्रह के बाद हर–एक समूह यह निश्चित करेंगे कि इनका उपयोग वह किस विषय में तथा किस प्रकार करेगा ?
- हर एक समूह इसकी एक लिखित कार्ययोजना बनायेगा। (१० – १५ मिनट)
- अगले ४५ मिनट में इन योजनाओ पर विषयवार एवं समूहवार प्रस्तुतीकरण करवाया जाये व उन पर चर्चा की जायें।

प्रशिक्षक हेतु निर्देश :

पहले सत्र में बनाये गये विषय– समूह यथावत रहेंगे। इनके आधार पर सत्र योजना में बनाई जाने वाली सामग्री के लिये निर्देश दें – कि प्रतिभागी अगले दिन सामग्री निर्माण के लिये घर अथवा आस–पास से जरूरी चीजें लायें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

सामग्री

क्रम : २

समय : १:३० घण्टा

उपविषय :
- सामग्री निर्माण।
- बनी हुई सामग्री का विषयवार उपयोग।

तरीका : पिछले दिन मंगाई गई सामग्री एवं ट्रेनिंगस्थल पर उपलब्ध सामग्री को बाँटकर विषय के अनुसार ४५ मिनट में शिक्षण सामग्री बनवाई जाय। बनाई गई सामग्री के साथ बड़े समूह में पाठों/विषयों का प्रस्तुतीकरण कराया जायेगा और उस पर चर्चा होगी (४५ मिनट)। चर्चा बिन्दुओं में निम्नलिखित बिन्दु भी शामिल किये जायेंगे।

- शिक्षक द्वारा किस–किस प्रकार की सामग्री का निर्माण किया जा सकता है ?
- सामग्री निर्माण में क्या बच्चों का सहयोग भी लिया जा सकता है ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ?
- यदि सामग्री निर्माण बच्चों से ही कराया जाय तो उसका क्या लाभ होगा ?
- क्या शिक्षक और बच्चे दोनों मिलकर सामग्री का निर्माण कर सकते हैं ? इससे क्या लाभ हो सकता है ?

✪✪✪✪

सत्र योजना

सामग्री

क्रम : ३

समय : १ घण्टा

उपविषय :
- अध्यापक अनुदान
- सहायक सामग्री का रख–रखाव

तरीका : प्रशिक्षक बड़े समूह में इन बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे और उसमें निकले निष्कर्षों/आये मतों को चार्ट पर नोट करेंगे।

- अध्यापक अनुदान का सहायक सामग्री बनाने में कैसे उपयोग करना चाहेंगे ?
- इस बारे में अब तक आपके अनुभव क्या रहे हैं ? कठिनाइयाँ, सफलताएं वगैरह ?
- अध्यापक अनुदान के बेहतर उपयोग के लिए आप किससे और क्या मदद चाहेंगे ?
- अनुदान से बनने वाली सामग्री में बच्चों की क्या भूमिका हो सकती है ?
- अच्छी शिक्षण सामग्री किसे कह सकते हैं ?
- सामग्री का रख–रखाव कैसे कर सकते हैं ? इसमें बच्चों की क्या भूमिका हो सकती है ?
- सामग्री निर्माण में विद्यालय के सभी शिक्षकों में तालमेल किस प्रकार हो ?

प्रशिक्षकों के लिए सुझाव : चर्चा इस तरह करायें कि प्रतिभागी कक्षा में सामग्री के प्रयोग के लिए अभिप्रेरित हों।

✪✪✪✪

सत्रयोजना

भाषा

क्रम : १

समय : १:३० घन्टा

उपविषय :
- भाषा क्या ?/क्यों ?/लक्ष्य
- भाषा का विकास/सीखने का ढंग

उद्देश्य :
- भाषा की समझ
- बच्चों की अपनी भाषा का महत्व
- भाषा के विकास की समझ

तैयारी : प्रतिभागियों को पहले बड़े समूह तथा बाद में ४–५ के छोटे समूह में बैठाया जाएगा।

तरीका :

१. पहले ३० मिनट में बड़े समूह में चर्चा उठायें कि मन के भावों/विचारों की अभिव्यक्ति कितने तरह से की जा सकती है। जैसे हाव–भाव, संकेत, अभिनय, अंग–संचालन, लिपि, चित्रात्मक कहानी, भाव–गीत, ध्वनियाँ। विभिन्न विचारों को चार्ट पर लिखा जाए।

२. अगले २० मिनट में प्रतिभागियों से आज की कोई रोचक घटना सरल शब्दों में बताने को कहें। निर्देश यह हो कि कठिन तथा लम्बे वाक्य न हों। चर्चा उठाएं कि –
   - क्या यह बच्चों पर लागू हो सकती है ?
   - इससे क्या लाभ होगा ?
   - क्या इस तरह की बातचीत से बच्चों के भाषा विकास में मदद मिलेगी ? यह तथ्य उभारें कि बच्चे अपनी भाषा में बोलें तो झिझक टूटेगी, आत्मीयता बढ़ेगी आदि।

३. अन्तिम ४० मिनट में प्रतिभागियों को ४–५ छोटे समूह में बांटे और चर्चा करें कि भाषा का विकास किन चरणों में होता है। सुनने, बोलने, लिखने, पढ़ने की अवधारणा बनायें। गूढ़ भावों को समझने, सम्प्रेषित करने, बातचीत करने के महत्व पर चर्चा उभारें। चर्चा छोटे समूह को बड़े समूह में बदलकर करें।

सावधानियाँ :
- प्रतिभागियों को क्रमशः बोलने दें, एक साथ नहीं।
- लम्बे संवादो/उल्लेखों को बढ़ावा न दें।
- भाषा की परिभाषा, लक्ष्य, विकास के बिन्दुओं को चर्चा के आरम्भ में ही स्वयं न व्यक्त करें। स्वाभाविक रूप से चर्चा के माध्यम से उभर कर आनें दें।
- चार्ट पर अंकित प्रतिभागियों के विचारों से ही निष्कर्ष निकालें।

✪✪✪✪

सत्रीय योजना

भाषा

क्रम : २

समय : १:३० घण्टा

उपविषय : घर की भाषा बनाम स्कूल की भाषा, घर की भाषा का कक्षा में उपयोग।

उद्देश्य :
- बच्चों की घर की भाषा को शिक्षण क्रिया से जोड़ना।
- बच्चों को बोलने के अधिक से अधिक अवसर देना।
- घर की भाषा से क्रमशः मानक भाषा की ओर ले जाना।

तैयारी : कौतूहल जगाने वाले कुछ चित्र, चार्ट, स्केचपेन आदि।

१. पहले ३० मिनट में प्रतिभागियों को एक कौतूहल भरा चित्र दिखाकर उसका प्रभाव देखें। (उदाहरण – घर की छत पर ट्रक/नाव में छाता लगाये मेढक)

चर्चा चलायें कि –
- विचित्र चित्र देखकर कैसा लगा ?
- क्या कुछ अजीब से विचार मन में आये ?
- क्या कुछ बोलने का मन हुआ ?
- बच्चों के साथ यही करें तो ?
- बातचीत का भाषा शिक्षण पर क्या प्रभाव पढ़ता है ?

२. भावगीत कराएं – (गतिविधि बैंक देख कर चुनें – १० मिनट)

चर्चा करें कि –
- हावभाव/संकेत/अंग संचालन से शब्दों के अर्थ कैसे प्रकट होते हैं ?
- संदर्भो से जुड़कर शब्द कैसे सार्थक हो जाते हैं ?
- बच्चों की भाषा का कक्षा में किस तरह से उपयोग कर सकते हैं ?

३. वाक्यों को जोड़ कर कहानी बनवाएं (४० मिनट) – प्रतिभागी एक–एक वाक्य जोड़कर एक कहानी बनाएगे। चर्चा करें कि –
- क्या बच्चों से ऐसी कहानी बनवाई जा सकती है ? क्या इसमें बच्चों की झिझक टूटेगी ?
- क्या घरेलू भाषा बोलने की हिचक घटेगी ?
- क्या इससे सोचने, विचारने तथा अपनी बात वाक्यों में कहने का ढंग आएगा ?
- क्या धीरे–धीरे 'उच्चारण दोष' घटेगा ?
- क्या भाषा की समझ बढ़ेगी ?
- क्या मानक भाषा सीखना आसान होगा ?

✪✪✪✪

सत्र योजना

भाषा

क्रम : ३

समय : १:३० घण्टा

उपविषय : भाषा सीखना–संदर्भ और उपयोग से ।

सामग्री : चर्चा पत्र १–२, चार्ट, स्केच पेन।

उद्देश्य :
- संदर्भों के द्वारा भाषा की समझ कैसे विकसित होती है ?
- संदर्भों से शब्दों तथा वाक्यों के अर्थ बदल जाते हैं ?
- भाषा की शुद्धता पर जोर कब से दिया जाए ?

तैयारी : ५–६ के छोटे समूह में प्रतिभागियों को बांटकर पहले चर्चा पत्र –१. **"सीखें ना सिखायें – बिन सीखे आ जाए"** और बाद में चर्चा पत्र – २. **"भाषा शिक्षण"** देकर पढ़ने और वाक्य रचना करने को कहेंगे ?

तरीका :

पहले ४५ मिनट में प्रतिभागी छोटे समूह में चर्चा करेंगे। तथा स्वयं वाक्य रचना करेंगे। दूसरे ४५ मिनट में प्रतिभागियों से बड़े समूह में निम्नलिखित चर्चा बिन्दु के माध्यम से चर्चा कोआगे बढ़ायेंगे।

१. तुकड़ादुम जैसे निरर्थक शब्द सार्थक कैसे बना ?
२. अक्षर क्या है ? (ध्वनि तथा संकेत का गठजोड़)
३. शब्द क्या है ? (ध्वनि + संकेत का गठजोड़)
४. प्रत्येक दशा में शब्दों को संदर्भों से जोड़ना जरूरी है। क्यों ?
५. क्या एक ही वाक्य का भिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ निकल सकता है ?
६. भाषा का कौन सा रूप अपनाया जाय ? शुद्धता किस स्तर तक ? कितनी ?
७. अधिक शुद्धता सीखने में बाधक तो नहीं ?

चर्चा बिन्दु से निकले निष्कर्षों को चार्ट पर अंकित किया जाये।

सावधानियां :

- चार्ट पर आये बिन्दुओं से निष्कर्ष तक पहुँचें।
- चर्चा पत्र छोटे समूह को दिया जाये।
- लम्बी चर्चा से बचें।
- छोटे समूहों को इकट्ठा कर बड़ा समूह बना लें।
- बड़े समूह में छोटे समूह के निष्कर्षों पर चर्चा कराएं।
- अपने विचार न थोपें।
- प्रतिभागियों को स्वयं निष्कर्षों तक पहुँचने में मदद करें।

✪✪✪✪

भाषा शिक्षण–पहला पर्चा

भाषा <u>संदर्भ</u> के जरिये अर्थ लेती है

१. हम संदर्भ के सहारे अर्थ निकालते है। उदाहरण के लिए : अगर हमें किसी शब्द का अर्थ नहीं पता हो तो हम पहले, और उसके बाद में आये शब्दों व वाक्यों के जरिये उसका अर्थ समझ लेते हैं। जैसे कि नीचे दिये वाक्यों में

– अगर तुम तुरन्त इधर नहीं आये तो तुम्हें तुकड़ाडुम कर दूँगा।

– उसने बटुआ निकाला और दुकानदार को थोड़ा तुकड़ाडुम किया।

– लाटरी जीतने की खबर मिलते ही वह तुकड़ाडुम नजर आने लगी।

आप करें :– अब आपकी बारी है । इस तरह के और कितने वाक्य बना सकते है ? दस, पन्द्रह करके देखिये एक शर्त जरूर है : संदर्भ आपका तुकड़ाडुम जरूर स्पस्ट होना चाहिये।

२. कभी–कभी एक ही चीज अगर अलग–अलग संदर्भों में कही जाय तो उसका अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए –

– "दरवाजा खुला है" – नीचे दी गई परिस्थितियों में इस वाक्य के अलग–अलग अर्थ होंगे

– किसी ने दरवाजा खटखटाया है।

– तूफान आने वाला है।

– आप किसी को बाहर करना चाहते हैं।

वाक्य वही है अर्थ बदल चुका है।

आप करें : ऐसे पॉच और उदाहरण।

३. कभी हम एक ही चीज अलग–अलग ढंग से कहते हैं। यह हम पर निर्भर करता है। कि हम किस संदर्भ में अपनी बात प्रस्तुत कर रहे हैं।

मान लीजिये हम पानी पीना चाहते हैं। अब पानी मांगने के लिये हम अलग–अलग तरह के वाक्यों का प्रयोग करेंगे, अगर हम :

– घर में अपने छोटे लड़के से कह रहे हों। (कैसे कहेंगे)

– किसी होटल में मांग रहे हों।

– अपने बॉस के घर मांग रहे हों (यहाँ तो शायद हिम्मत ही न करें।)

आप करें : हर जगह किस तरह के वाक्यों का उपयोग होगा। क्या इसी तरह के पॉच और उदाहरण ढूंढ़े जा सकते हैं ?

इन सबसे एक महत्व पूर्ण निष्कर्ष ये निकाला जा सकता है कि –

भाषा शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य होना चाहिये कि उसके जरिये बच्चे :

– अलग–अलग संदर्भों में अर्थ निकाल पायें।

– अलग–अलग संदर्भों में अपनी बात दूसरों तक पहुँचा पायें।

आप करें : क्या निष्कर्ष सही हैं ? (कारण दिये बगैर हाँ या ना कहिये) अगर यह निष्कर्ष सही हैं तो इसका हमारी वर्तमान भाषा शिक्षण पद्धति पर क्या फर्क पड़ेगा ? क्या भाषा शिक्षण में हमें अब कुछ अलग करने की जरूरत है।

भाषा शिक्षण–दूसरा पर्चा

<u>बिना उपयोग के बात न बने</u>

प्रयोग में ही अस्तित्वः

भाषा का प्रयोग ऐसे संदर्भों में व ऐसे उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जो उपयोग करने वाले के लिये सार्थक हों।

दैनिक जीवन में हम किसी व असल संदर्भ में ही भाषा का प्रयोग करते हैं। अपने किसी असल मकसद को पूरा करने के लिये। अगर हम कुछ बोलते हैं तो वह इसलिये कि किसी को कुछ कहना है। अगर हम अपने आप के लिये भी बुदबुदा रहें हैं तो इसके लिये ही कुछ सोच रहे हैं, अपने से बात कर रहे हैं या अपने को अभिव्यक्त कर रहे हैं जैसे कि "ऊफ" या "अरे यार, नमक की पुड़िया कहाँ रखी।"

इसी तरह जब हम लिखते हैं तो वह भी किसी खास उद्देश्य के लिये जैसे किसी को जानकारी देना, निर्देश या भावना पहुँचाना। किसी जानकारी को रिकार्ड करना या अपने विचारों को व्यवस्थित करना आदि। और हाँ हम आनन्द के लिये भाषा का प्रयोग करते हैं। एक कलात्मक क्रिया के रूप में। लेकिन जैसे भी देखा जाय, हम किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भी भाषा का प्रयोग करते हैं।

आप करें :

चर्चा – १ क्या कक्षा में बच्चों को हर समय (उनके लिये) उद्देश्यपूर्ण भाषा का प्रयोग करने का मौका मिलता है ?

२. क्या शुद्ध भाषा ही असली भाषा है ?

प्रस्तुत है एक प्रशिक्षण में घटने वाली घटना :

प्रशिक्षक : बाल अवस्था में सर्वांगीण संज्ञानात्मक विकास के लक्ष्य की पूर्ति शिक्षक सम्मिलन पद्धति के माध्यम से क्रियाकरण उत्पन्न कर परिपूर्ण कर सकते हैं।

प्रशिक्षणार्थीः जी, क्या कहा

प्रशिक्षक : फर अपनी बात दोहराता है।

प्रशिणार्थी : सर, आप हिन्दी में नहीं बात नहीं कर सकते ?

(इस पर कक्षा में गहरी चर्चा होती है)

आप करें : क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इस कक्षा में कैसी चर्चा हुई होगी।

अन्त में :

प्रशिक्षणार्थीः तो आप कहना चाहते हैं कि बच्चों को पूरी तरह सीखने में मदद करने के लिये शिक्षक को उसका भागीदार बनना चाहिये। अरे ! तो सीधे–सीधे क्यों नहीं कह सकते थे ?

आप करें : बताइये क्या मुश्किल थी सीधे–सीधे कहनें में ?

अब देखते हैं। इसी तरह के दूसरे उदाहरण को कैसे आप इससे भी परिचित होंगें। नाव में बैठकर पंडित जी मल्लाह को कहते हैं अरे तुझे वेद–पुराण नहीं आते। तुझे ज्ञान की भाषा नहीं आती .... तेरा आधा जीवन बरबाद ही समझो।

मल्लाहः पंडित जी तैरना आता है।

पंडि : अरे ! मेरे ज्ञान के सामने भी ये कोई ज्ञान है। नहीं आता तैरना।

मल्लाहः पंडित जी नाव तो डूब रही है। मैं अपने आप को बचा लूँगा, पर आपका का तो पूरा जीवन बरबार ही समझो।

अगर हम "बोलचाल की भाषा" और "शुद्ध" भाषा में अंतर करें तो हम पाते हैं कि

१. कई बार शुद्धता की वजह से समझने–समझाने वाली बात नही बनती बल्कि वह तो सम्प्रेषण में बाधा बन उठती है। इसके विपरीत बोलचाल की भाषा साफ–सुथरे ढंग से हमारी बात दूसरों तक पहुँचा देती है।(यानी प्रशिक्षक महोदय प्रशिक्षणार्थियों की पूरी तरह मदद करने में सफल रहे।)

२. कहीं ऐसा तो नहीं कि शुद्धता पर जोर हम बच्चों पर ऐसे ज्ञान कौशल को लाद रहें हैं जिसका दैनिक जीवन में बहुत कम उपयोग है और साथ ही इसी वजह से भाषा के उन पहलुओं पर जोर नहीं दे रहे जिनकी वास्तव में जरूरत है। शायद पंडित जी और मल्लाह के बीच, इसी स्थिति की जरूरत है।

भाषा का उपयोग आत्म विश्वास के साथ लचीलेपन के साथ संदर्भ के अनुसार कर पाना कितना जरूरी है ? भाषा में अर्थ समझा सकना या पहुँचा पाना ज्यादा जरूरी है न कि "शुद्ध" भाषा का प्रयोग करना भले ही उसे समझने में कठिनाई क्यों न हो ?

आपको क्या लगता है कि शुद्धता पर कितना जोर दिया जाना चाहिये।

सत्र योजना

भाषा

क्रम : ४

समय : १:३० घण्टा

उपविषय : पढ़ने की क्रिया/दक्षता का विकास कैसे ?

उद्देश्य :
- बच्चे के पूर्व ज्ञान को आधार बनाना।
- रुचिकर प्रसंगों/ प्रकरणों पर जोर।
- परिचित संदर्भों की सहायता से अपरिचित का बोध।
- रटने की बजाय समझकर पढ़ने पर बल।

सामग्री : चार्ट, स्केच आदि।

तैयारी : एक चार्ट पर चूहे/शेर की कहानी लिखकर रखें। दूसरे चार्ट पर केवल चित्रों की सहायता से वही कहानी स्पष्ट कर लें।

तरीका : (१) प्रथम २० मिनट में क्रमशः दोनों चार्ट को प्रतिभागियों को दिखायें। पूछें कि अधिक सम्प्रेषण किस में है ? रोचक कौन सा है ? आरम्भ में शब्दों के स्थान पर चित्रों का उपयोग बच्चों के लिए किस प्रकार उपयोगी है ?

अगले ४० मिनट में प्रतिभागियों को ५–५ के समूह में बाँट कर उन्हें खुद की चित्रात्मक कहानी बनाने को कहें। समूह अपनी तैयार चित्रकथाओं को आपस में बदल लेंगे। हर एक समूह १० मिनट के अन्दर उसको प्रस्तुत करने की तैयारी कर लेंगे। बड़े समूह में इसका प्रस्तुतीकरण कराएं। एक समूह की चित्र कथा को दूसरा समूह प्रस्तुत करेगा। जिस समूह की यह चित्र कथा होगी उसका विचार लिया जायेगा। क्या उन्होंने जो सोचकर कहानी बनायी, वही बात कहानी में आयी या कुछ और ?

समय– ३० मिनट

(२) पढ़ने की दक्षता विकसित करने के लिए निम्न चर्चाओं को उभारें –
- बच्चे चित्र पहचानते हैं। अतः शब्द/अक्षर जाने बिना भी बोलते हैं।
- चित्रों/संदर्भों से बार–बार जुड़ने से अपरिचित शब्द 'परिचित' होने लगते हैं।
- बच्चा चिन्ह और ध्वनि में सम्बन्ध बिठाने लगता है ?
- समान उच्चारण वाले अक्षरों/शब्दों की बारम्बारता से पढ़ने की समझ आती है।
- शब्दों के अर्थ संदर्भ से जुड़े होते हैं।
- परिचित वस्तुओं से पढ़ना आरम्भ करना आसान है।

सावधानियाँ –

- प्रतिभागी समय सीमा ध्यान में रखकर साधारण रेखा चित्र से कहानी बना लें।
- कार्य के दौरान प्रत्येक समूह में धूम कर देखते रहें, अपनी राय देते रहे, प्रोत्साहित करते रहे, प्रशंसा/अलोचना की अधिकता से बचे।

यदि आप स्वयं चित्र नहीं बना सकते हों तो किसी पत्रिका/पुस्तक से इन्हें काट कर चार्ट पर चिपका कर तैयार कर लें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

भाषा

क्रम : ५

समय : १ घण्टा

उपविषय :
- यह आभास कराना कि बच्चों की अपनी सीमाएं है।
- लेखन के लिए धैर्य/अभ्यास/प्रेरणा जरूरी है।
- बच्चों की सूक्ष्म मांसपेशियो के विकास का उपाय आवश्यक है।
- सुलेख के लिए विशेष प्रयत्न जरूरी है।
- लिखित रूप में अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर जरूरी हैं।

उद्देश्य : लिखना/सीखने की दक्षता का विकास।

तैयारी :
- चार्ट/स्केचपेन/मार्कर/२ फीट लम्बी डण्डी।
- एक चार्ट पर कुछ आकृतियॉ पेन्सिल से बना लें।
- २ फीट के डंडे के छोर पर सुतली/धागे से मार्कर को अच्छी तरह बाँध करके लम्बी लेखनी बना लें।

तरीका : (प्रथम साठ मिनट में – दो गतिविधियाँ)

१. प्रतिभागियों से पूर्व निर्मित चार्ट पर निश्चित आकृति २ फीट की लेखनी को एक छोर से पकड़ कर लिखने को कहें – (आठ प्रतिभागियों से)
- आठ प्रतिभागियों से उसी लेखनी द्वारा पूर्वनिर्मित आकृतियों पर पुनः आकृति बनाने को कहें।
- अन्य आठ प्रतिभागियों को चार्ट के रिक्त भाग में साधारण पेन द्वारा वैसी ही आकृतियाँ बनाने को कहें। अन्य आठ को स्वेच्छा से आकृतियाँ बनाने को कहें।

चार्ट का प्रारूप

२. अब सभी प्रतिभागियों को दाएं हाथ से (या जिस हाथ से वे लिखने के अभ्यस्त हों) इमला लिखवाएं। यह इमला उल्टे अक्षरों में लिखी जाए। इमला की गति सामान्य रखें ताकि लिखने में कठिनाई अनुभव हो।

१. २ फीट के डंडे से आकृति बनवाएं।
२. पूर्व आकृति पर डंडे से पुनः बनवायें
३. अपने आप पेन से बनाएं।
४. कोई भी आकृति बनाएं।

अन्तिम तीस मिनट में

बड़े समूह में उपरोक्त गतिविधियों से निकले परिणाम पर चर्चा कराएं । चार्ट पर अंकित करें।

चर्चा के बिन्दु
- डण्डे के छोर पर बांधे मार्कर से लिखना कैसा लगा ? क्यों ?
- पूर्व निर्मित आकृति पर मार्कर फेरना कैसा लगा ? अन्तर क्या रहा ?
- बताई गई आकृति साधारण पेन से बनाने का अनुभव बताइए ?

ध्यान देने योग्य
– गतिविधि में अधिक समय न लगायें। शीघ्रता करें।
– चर्चा पर विशेष ध्यान दें।
– चर्चा सटीक और संक्षिप्त रखें।

- स्वेच्छा से आकृति बनाने से पूर्व / बनाते समय क्या लगा ? कैसे भाव आए ?
- उल्टे अक्षरों में इमला लिखना कैसा लगा ? अटपटा क्यों लगा ?

अब इस चर्चा में इस बात को उभारने का प्रयास करें कि –

१. बच्चे की लिखने में सीमाएं क्या हैं ?
२. वह सुगमता से कैसे सीख सकता है ?
३. कितना सहयोग चाहिए ?
४. मार्गदर्शन तथा सहानुभूति कितनी, कैसी हो, इससे लाभ ?

सावधानियाँ :

- प्रतिभागियों के विचारों को चार्ट पर अंकित करें।
- जहाँ अवसर मिले कक्षा के अनुभवों के साथ जोड़ते चलें।
- बेवजह की बहस से बचें।
- बच्चों में लिखना सीखने की दक्षता का विकास कैसे होता है। इस पर मौजूद साहित्य के साथ–साथ अन्य साहित्य का भी अध्ययन कर लें।
- बेहतर हो कक्षा से संबंधित कुछ उदाहरण पूर्व से तैयार कर रखें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

भाषा

क्रम : ६

समय : १:३० घंटा

उपविषय : बच्चों/शिक्षकों की भाषा शिक्षण की कठिनाइयां तथा उनके हल।

उद्‌देश्य :
- भाषा की कक्षा कैसी हो ?
- भाषा सीखने में बच्चों की कठिनाइयों पर समझ।
- शिक्षकों की भाषा शिक्षण में स्वयं की कठिनाइयों की समझ।
- विचारों के आदान–प्रदान से हल ढूंढ़ना।

सामग्री : चर्चापत्र

तैयारी : बड़े समूह को चार भागों में बाँटकर विचार हेतु भिन्न–भिन्न समस्यायें दी जायेंगी।

चर्चापत्र को साफ–साफ लिखकर पर्याप्त फोटो प्रति करवा लें या चार्ट पेपर साफ–साफ लिखकर टांग दें।

पहले ४० मिनट में

तरीका : पहला तथा तीसरा समूह यह विचार करे कि बच्चों को भाषा सीखने में क्या कठिनाइयाँ होती है। उन्हें क्रमवार अंकित करें तथा इन कठिनाइयों का हल भी अंकित करें।

दूसरा और चौथा समूह यह विचार करें कि भाषा शिक्षण में शिक्षक को क्या कठिनाइयाँ हैं। उनको हल करने के उपाय सहित उन्हें लिखें। फिर बड़े समूह में चर्चा हो। साथ ही प्रमुख बिन्दु चार्ट पर लिखे जाएं।

छोटे समूह में चर्चा – २० मिनट में

चर्चा पत्र के माध्यम से छोटे समूह में चर्चा करायें। पुनः बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण कराकर चर्चा बिन्दुओं को स्पष्ट करायें।

अन्तिम ३० मिनट में

चर्चापत्र

१. आप भाषा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिये कक्षा को कैसा बनाना चाहेंगें ? कौन सी सहायक सामग्री/डिस्प्ले सामग्री का उपयोग करेंगें।

२. बच्चों से इस काम में क्या मदद लेंगें ? खुद क्या करेंगें।

३. सजी हुई भाषा कक्षा एक साधारण कक्षा से भिन्न कैसे रहेगी ? सीखने–सिखाने की क्रिया पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

४. क्या कक्षा में सुलेख, निबंध, चित्रात्मक, कहानी, अन्त्याक्षरी आदि आयोजित करायी जा सकती है ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव : छोटे समूह में चर्चा के समय प्रतिभागियों को सहयोग दें, प्रेरित करें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : १

समय : १:३० घन्टा

उपविषय :
- गणित क्या ?
- जीवन में गणित।
- गणित शिक्षण की वर्तमान दशा।

माध्यम / तरीके : प्रतिभागियों को पाँच या छः के समूहों में बाँट कर निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करायी जायेगी ।

- गणित क्या है ? गणित क्यों जरूरी है ?
- क्या जीवन में गणित है ? यदि है तो कहाँ–कहाँ ?
- क्या हम कक्षा–शिक्षण में इसका उपयोग कर सकते हैं ? कैसे ?
- क्या आज गणित में नियमों / परिभाषाओं को याद कराने पर जोर नहीं है ?
- क्या परिभाषाओं को याद करने से समझ बढ़ती है ?
- क्या हम सूत्रों में गणित नहीं पढ़ाते ? क्या यह एक प्रकार का रटना ही नहीं है ?
- क्या सूत्र रटाने से समझ बढ़ती है ?
- क्या वर्तमान में हम उत्तर को ही महत्वपूर्ण नहीं मानते है ?
- क्या अध्यापक द्वारा बताई विधि ही एकमात्र सही विधि हो सकती है ? या और विधियाँ भी सही हो सकती हैं ?

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :
- ऊपर के प्रश्नों पर छोटे समूहों में चर्चा करायी जायेगी।
- छोटे समूह के मतों का प्रस्तुतीकरण बड़े समूह में होगा।
- बड़े समूह के मतों को चार्ट पर अंकित किया जायेगा।
- बड़े समूह से उभरे मतों के आधार पर ऊपर दर्शाये गये उद्देश्यों पर सामान्य समझ बनाने का प्रयास होगा।
- प्रशिक्षकों से पूर्व तैयारी चाहिये।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : २

समय : १ घंटा

उपविषय :
- गणित को लेकर गलत धारणाएं।
- गणित से भय।

माध्यम/तरीके : प्रतिभागियों को छोटे समूहों में बाँटकर उपविषय से जुड़े इन बिन्दुओं पर चर्चा करायी जाय –

- आपके अनुसार गणित के बारे में कौन–कौन सी गलत धारणाएं फैली हुई हैं ?
- क्या यह सच है कि लड़कियाँ गणित में कमजोर होती हैं ? या गणित उनका विषय नहीं है ? क्यों ?
- क्या गणित ही एकमात्र 'ठोस' और महत्वपूर्ण विषय है ? बाकी विषय गौण हैं ? क्या गणित विषय में ही गणित होता है ? बाकी विषयों में गणित मौजूद नहीं होता ? यदि होता है तो किस रूप में ?
- क्या गणित एक कठिन और डरावना विषय है ? हाँ तो क्यों ? क्या आपको कभी गणित से डर लगा ? क्यों ? कब ?

प्रशिक्षक हेतु सुझाव –

- प्रशिक्षक चाहें तो प्रत्येक समूह को सभी प्रश्न, चर्चा के लिये दे दें अथवा हर एक समूह को अलग–अलग प्रश्न/बिन्दु चर्चा के लिये दें।
- लड़कियाँ बनाम गणित पर चर्चा को इस प्रकार उभारा जाय कि लड़कियों के गणित में कमजोर होने का भ्रम टूटे और उनके लड़कों के बराबर होने की पुष्टि हो। इसके साथ ही गणित के डरावना विषय होने की धारणा भी टूटे।
- चर्चा में आये प्रमुख निष्कर्षों को चार्ट में नोट करें।
- प्रशिक्षक अपने पास अनुभव आधारित ठोस उदाहरण तैयार रखें, ताकि जरूरत के अनुसार उपयोग किये जा सके।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : ३

समय : २ घंटा

उपविषय :

- गणित का पूर्वज्ञान/स्कूल से पहले गणित।
- कक्षा में गणित।
- गणित में मूर्त/अमूर्त अवधारणाएं।
- गिनना/गिनती का एहसास।
- पहले मूर्त फिर अमूर्त अर्थात ठोस वस्तुओं से अंकों की ओर।
- गणित में रटना बनाम अभ्यास।
- परिणाम महत्वपूर्ण या प्रक्रिया ?

तरीका : चर्चा व गतिविधि (स्थिति का कमाल)

प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट कर चर्चापत्र पर चर्चा करायी जाय। पुनः बड़े समूह में प्रत्येक समूह के एक प्रतिभागी से 'समूह' के विचार प्रस्तुत कराये जायेंगे। चर्चा इस प्रकार होगी कि हर एक समूह से पहले एक ही बिन्दु पर लगातार मत लिये जायेंगे और बड़े समूह में उसी बिन्दु पर बातचीत होगी, तब चर्चा पत्र का दूसरा बिन्दु लेकर यही प्रक्रिया अपनाई जायेगी। चर्चा में उभरे मतों/निष्कर्षों को चार्ट पर नोट किया जायेगा।

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :

- चर्चा पत्र के तीसरे बिन्दु पर चर्चा को समेटते हुए "स्थिति का कमाल" गतिविधि कराई जा सकती है। इससे गणित सीखने में ठोस वस्तुओं (मूर्त चीजों) की क्या भूमिका है – यह समझने में मदद मिलेगी – और इसी गतिविधि से "इकाई–दहाई" को अवधारणा भी दी जा सकती है।
- प्रशिक्षक यदि इसके अतिरिक्त कोई बेहतर गतिविधि सोचकर कर सकते हैं तो करें।
- "स्थिति का कमाल" गतिविधि बैंक में देखें।

✪✪✪✪

सत्रयोजना–३

चर्चापत्र : गणित

१. प्राइमरी स्कूल के दिनों को याद करें और बतायें कि आपको गणित विषय सीखना कैसा लगता था ? और क्यों ?

२. स्कूल आने से पूर्व गणित विषय से संबंधित किस प्रकार के अनुभव बच्चे के पास होते हैं ?

३. गणित को एक अमूर्त विषय क्यों कहा जाता है ? गणित का यह अमूर्तपन क्या बच्चों के सीखने में बाधक होता है ?

४. गणित में सूत्रों और परिभाषाओं की महत्वपूर्ण जगह है ? हाँ/नहीं/क्यों/कितनी ?

५. गणित में क्या अधिक महत्वपूर्ण है – समझना या याद करना ? क्यों ?

६. अभ्यास और रटने में क्या फर्क है ?

७. सवाल हल करने में क्या महत्वपूर्ण है – उत्तर या प्रक्रिया ? क्यों ?

८. क्या आप मानते हैं कि गणित एक गंभीर विषय है और इसे गंभीरता पूर्वक ही पढ़ाना चाहिये ?

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : ४

समय : २ घण्टा

उपविषय : ▪ गणितीय संक्रियाएं
▪ जोड़ – घटाना

तरीका : गतिविधि (वर्ग हल, 'मुझे चिन्ह दो') एवं चर्चा

प्रशिक्षक प्रतिभागियों को कोई दो प्रश्न जोड़–घटाने के (परंपरागत ढंग) देगें। जब वे इन्हें हल कर लें तो जोड़ – घटाने का 'वर्ग हल' करने को देगें।

गतिविधि 'वर्ग हल'

६	६	६	८	१६	१३
७	१	३	११	५	२०
१४	७	५	१८	१३	७
८	१६	७	३	२५	१६
८	१	१५	२२	२	१२
८	१२	३	१८	६	३

गतिविधि का तरीका : इस वर्ग में प्रश्न और उत्तर दोनों छिपे हैं। आपको तीन संख्याओं को सीधा, तिरछा अथवा एल (L)के रूप में लेकर ऐसा समूह बनाना है जिसमें दो संख्याओं के जोड़ या घटाने का उत्तर तीसरी संख्या होगी। जो तीन प्रतिभागी सबसे पहले हल करेंगे उनका नाम श्यामपट्ट पर लिखा जायेगा ।

इसके बाद जोड़–घटाने की पारंपरिक विधि व गतिविधि आधारित 'वर्ग हल' पर चर्चा– बड़े समूह में कराई जायगी । चर्चा बिन्दु कुछ इस प्रकार हो सकते हैं –

- इन दोनो विधियों में से किसमे आपको मजा आया ? और क्यों ?
- बच्चों को जोड़–घटाना सिखाने के लिये किस प्रकार की गतिविधि बनानी चाहिए जिससे उन्हें मजा आये और वे खेल–खेल में सीख सकें ? (चाहें और जरूरी समझें तो और भी संबंधित बिन्दु ढूढ़ कर उन पर चर्चा करायें।)

जोड़–घटाने की एक और गतिविधि : प्रशिक्षक यह कह कर प्रतिभागियों को अगली गतिविधि के लिए आमंत्रित करेगा – 'आइये, जोड़–घटाने की एक गतिविधि और करते हैं और देखते हैं कि क्या कक्षा में इसका उपयोग कर सकते हैं ?

गतिविधि – "मुझे चिन्ह दो"

१. ४ ☐ ३ ☐ ७ ☐ ५ ☐ ८ ☐ २ = ६

२. ४१ ☐ ३३ ☐ ३१ ☐ ६१ ☐ ११ = ५७

३. ३५ ☐ ४ ☐ ६ ☐ १ = ११ ☐ २३ ☐ ४ ☐ ११

नोट :

- प्रशिक्षक के पास इन गतिविधियों के विकल्प हों तो बेहतर है। यह गतिविधि केवल आपके सुझाव/आइडिया के लिए है।
- प्रशिक्षक समय का ध्यान रखते हुए उपरोक्त में से एक, दो या तीनों गतिविधियाँ करा सकते हैं ।

गतिविधि के बाद संक्षिप्त चर्चा कराई जा सकती है। चर्चा बिन्दु इस तरह हो सकते हैं –

- क्या इस तरह के प्रश्नो से बच्चों में गणित में रुचि पैदा की जा सकती है?
- क्या बच्चों के अलग–अलग स्तरों को ध्यान में रखते हुए इन सवालो को और सरल व कठिन बनाया जा सकता है ?

  (इस तरह के और भी सवाल/चर्चा बिन्दु आप बना सकते हैं।)

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :

सत्र की समाप्ति पर प्रशिक्षक पाँचवें सत्र के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित करने हेतु सभी प्रतिभागियों को चार समूहो में बाँट देंगे और चार समूहों में से एक समूह को ४० कंकड़, एक समूह को ४० माचिस की तीलियाँ, एक समूह को ४० पत्तियाँ और एक समूह को ४० चने के बीज लाने की जिम्मेदारी देंगे।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : ५

समय :

उद्देश्य/उपविषय : ▪ गणितीय संक्रियाएं

▪ गुणा–भाग

तरीका/माध्यम : गतिविधियां (सामग्री से गुणा–भाग दिखाना और अंक झपट्टा) तथा उन पर चर्चा।

- प्रशिक्षक पहले गुणा–भाग के कुछ सामान्य सवाल देंगे जिन्हें प्रतिभागी बड़े समूह में अपनी कापी पर हल करेंगे ।
- इसके बाद उन्हें सामग्री के हिसाब से पहले से तय चार समूहों – 'कंकड़–समूह', 'पत्ती–समूह', 'तीली समूह' और 'चना समूह' में बाँट दिया जायेगा । अपने नामों के अनुसार उनके पास सामग्री होगी ही ।
- प्रशिक्षक इनकी मदद से गुणा और भाग की संक्रियाएं करायेंगे।
- पहले सभी प्रतिभागी अपनी सामग्रियाँ गिन लेंगे। फिर प्रशिक्षक के संकेत पर सब सामग्री से गुणा–भाग करेंगे ।
- मिसाल के लिए प्रशिक्षक पहले छः के समूह में छः जगह तीलियाँ, पत्तियाँ, कंकड़ आदि रखवायेंगे फिर उनकी कुल गणना करवायेंगे। उसे कापी पर लिखवायेंगे और बताएंगे कि जोड़ की संक्षिप्त प्रक्रिया ही गुणा है।

प्रशिक्षक छः तीलियाँ – छः जगह = सब मिलाकर

६ X ६ = ३६

पुनः प्रशिक्षक तीलियाँ, पत्तियाँ या कंकड़ एक जगह रखवायेंगे। उनकी संख्या लिखवायेंगे। इसके बाद उनके सात–सात के समूह बनवायेंगे। कुल पाँच समूह बनेंगे। शेष ५ रह जायेंगे। इसे वह कापी पर यों लिखवा सकते हैं :

४० तीलियाँ ÷ ७ तीलियाँ = ५ समूह

शेष तीलियाँ ५

इसे चार्ट पर इस रूप में भी लिखा जा सकता है :

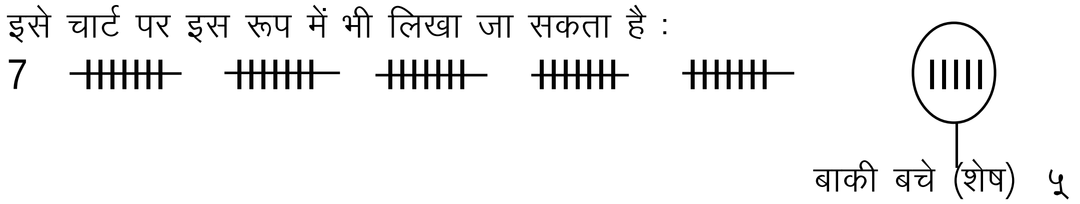

प्रशिक्षक हेतु सुझाव –

घटाव का संक्षिप्त प्रक्रिया भाग है। जैसे ४० तीलियों को ७ को ७ बार घटाया जाए उसके बाद भी ५ तीली बचती हैं। (४० में ७ को कितनी बार घटाया जा सकता है ?) और कितनी तीली बचेगी ? पश्न भी पूछे जा सकते हैं।

प्रशिक्षक संक्रियाएं इस प्रकार कराएं कि प्रतिभागियों को – गुणा का मतलब (चीजों का एक

खास संख्या में बार–बार जमा होना) स्पष्ट हो जाये ।

उन्हें भाग का मतलब (चीजों की बड़ी संख्या के कुछ बराबर हिस्से करना) स्पष्ट हो जाये । यानि इन वस्तुओं से क्रिया कराते हुए प्रतिभागियों तक गुणा और भाग का 'एहसास' जाये।

अंक झपट्टा

१. प्रतिभागियों के बीच में एक गोला बनाकर १ से ५० तक के अंकों को कार्डों पर लिखकर रख देंगे। फिर १०–१० प्रतिभागियों के दो ग्रुप बनायेंगे। उन्हें गोलों के दोनो ओर खड़ा कर देंगे। दोनों – ग्रुपों के प्रतिभागियों को उनके क्रमांक बता देंगे ।

२. फिर जिस अंक के दो प्रतिभागियों को बुलाया जायेगा वे आकर गोले के चक्कर लगायेंगे।
   - प्रशिक्षक दो अंकों के बीच गुणा या भाग का चिन्ह लगाकर बोलेगा।
   - प्रतिभागी बोले गये अंकों के गुणनफल या भागफल वाला कार्ड उठाकर अपने पाले में भागने की कोशिश करेंगे।
   - सभी प्रतिभागियों को अवसर दिया जायेगा।

३ यह गतिविधि एक बार गुणा तथा एक बार भाग के रूप में भी करवाई जा सकती है।
   गतिविधि के बाद प्रशिक्षक इन बिन्दुओं पर चर्चा करायेंगे।
   - गुणा की खूबी।
   - भाग की खूबी।
   - दोनों की प्रक्रिया में फर्क ।
   - दोनों के नतीजों में फर्क ।
   - जोड़ और गुणा में समानता, इनमें फर्क ।
   - भाग और घटाने में समानता, इनमें फर्क ।
   - सीधे कापी में गुणा–भाग करने तथा वस्तुओं के साथ गुणा–भाग करने में क्या फर्क महसूस हुआ ?
   - बच्चों को अलग–अलग वस्तुओं के साथ गुणा–भाग के अभ्यास से क्या लाभ होंगे ?
   - क्या आप भी ऐसी कुछ गतिविधियाँ बना सकते हैं ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव : चर्चा में आये मतों को चार्ट पर नोट किया जायेगा ।

✪✪✪✪

सत्र योजना

गणित

क्रम : ६

समय : २ घंटा

उपविषय : जगह की समझ/व्यवस्था, रेखाएं, आस–पास की आकृतियों में रेखाएं खोजना, ज्यामितिक आकृतियाँ बनाना,

गणित की कठिनाइयाँ

सामग्री : चर्चापत्र, एक मीटर रस्सी, एक छोटा पत्थर, माचिस की चार–पांच भरी हुई डिबियां, साइकिल के वाल्व (टयूब में प्रयुक्त होने वाली रबर की नली का टुकड़ा)।

तरीका : **चर्चा और गतिविधियाँ**

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को पांच या छह के समूहों मे बाँटकर "जगह की समझ" वाला चर्चापत्र बाँटेंगे। इस पर २० मिनट की ग्रुपचर्चा होगी और ग्रुप अपनी चर्चा के नतीजों को नोट करेंगे।
- २० मिनट के बाद प्रशिक्षक प्रेरक समूहों में साइकिल की तीलियाँ व माचिस की तीलियाँ बांट देंगे। इनसे त्रिभुज, चतुर्भुज, कोण आदि बनाने को कहेंगे।

(गतिविधि समय – १० मिनट)

- अब प्रतिभागी बड़े समूह में आ जायेंगे और प्रशिक्षक रस्सी पर पत्थर बांध कर प्रतिभागियों के सामने सीधी रेखा का एहसास देंगे। फिर उससे फर्श पर एक टेढ़ी (वक्र) रेखा बनायेंगे।
- इसके बाद बड़े समूह में निम्न बिन्दुओं पर चर्चा होगी।
- हम अपने आस–पास सीधी व टेढ़ी रेखाएं किन–किन रूपों में देखते हैं ?
- अपने परिवेश में गोले, तिकोने, (त्रिभुज) और चौकोर (चतुर्भुज) किन–किन रूपों/चीजों मे देखते हैं ?
- हमारे आस–पास दो, तीन, चार या छह तीले वाली कौन–कौन सी चीजें हैं ?

समय : २५ मिनट

२– गणित की कठिनाइयां :

- गतिविधि "चिन्हों का झंझट" (BODMAS) कराई जायेगी। फिर इस पर बड़े ग्रुप में इन बिन्दुओं पर चर्चा होगी।
- इस गतिविधि में गणित के किन–किन चिन्हों का प्रयोग हुआ ?
- जब आपको जोड़–घटाना, गुणा–भाग आता है तो आपको हल निकालने में परेशानी क्यों हुई ?
- क्या गणितीय चिन्हों की मिश्र संक्रियाओं को हल करने का कोई क्रम/तरीका होता है ? हाँ तो कौन सा ?
- क्या ऐसी समस्याएं बच्चों के सामने आती हैं ? यदि हाँ तो उन्हें कैसे दूर किया जाय ?
- प्रतिभागियों को पुनः छोटे–छोटे समूहों में प्रतिभागियों को बाँटकर उनसे "कठिनाइयों के चर्चापत्र" पर चर्चा कराई जायेगी।

समय : २५ मिनट

प्रशिक्षक हेतु सुझाव :

१. आवश्यक सामग्री को पहले से इकट्ठा कर लें।

२. कठिनाइयों पर चर्चा में यह बात उभारें कि 'सहायक सामग्री' की गणित शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है।

३. रस्सी से रेखाएं बनाने का यह मतलब नहीं है कि रस्सी को रेखा मान लिया जाये। रस्सी का प्रयोग प्रशिक्षक सिर्फ रेखा का एहसास देने के लिये करेंगे।

सत्रयोजना–गणित ६

चर्चापत्र १ जगह (स्पेस) की समझ

१. स्कूलों में ज्यामिति सीखने–सिखाने का क्या उद्‌देश्य हो सकता है ? इसे किस कक्षा से सिखाना ठीक रहेगा और क्यों ?

२. हम स्कूल के बाहर ज्यामिति का कहाँ–कहाँ और किन–किन रूपों में उपयोग करते हैं ?

३. बच्चे अपने खेलों/जीवन में ज्यामिति का कहाँ–कहाँ इस्तेमाल करते हैं ?

४. बच्चों को ज्यामिति आकारो गोला (वृत्त), तिकोन (त्रिभुज), आयत, वर्ग आदि की परिभाषा याद कराना ठीक है या उनके आस–पास व पसंद की चीजों में इन आकृतियों को खोजना ज्यादा मजेदार रहेगा ?

५. क्या ज्यामिति आकृतियों और 'जगह की समझ'/'जगह की व्यवस्था' में कोई संबंध है ? कैसा ? इस पर कुछ बातें लिखे।

६. कक्षा में 'ज्यामिति की समझ' बनाने के लिये हमें क्या उपाय करने होंगे ?

गणित – सत्र ६

चर्चापत्र २ गणित की कठिनाइयाँ

१. गणित की कठिनाइयाँ किन कारणों से पैदा होती हैं। ऐसे चार–पांच कारण सोचें और कापी में नोट करें।

२. गणित सीखने–सिखाने में आपको सबसे कठिन प्रक्रिया कौन सी लगती है ? पढ़ना/गिनना/लिखना या कुछ और क्यो ?

३. बचपन में आपको गणित सीखने में कौन सी प्रक्रिया/संक्रिया कठिन लगती थी और क्यों ? अपना अनुभव संक्षेप में लिख लें।

४. क्या किताब या अध्यापक की भाषा भी सीखने–सिखाने में कठिनाई पैदा कर सकती है ? इसके कुछ उदाहरण याद कर बता सकते हैं ?

५. क्या इबारती सवालों में बच्चे सवालों के ब्योरों/विवरणों पर भी सोचते हैं ? क्या इससे कोई कठिनाई पैदा होती है ? आपने इसे कैसे हल किया ?

६. आपकी राय में ऐसा क्या किया जाय कि बच्चों की गणित में रुचि जागे। वे खुद–ब–खुद प्रश्न हल करने की ओर प्रेरित हों और प्रश्न करें ?

✪✪✪✪

सत्रयोजना

पर्यावरणीय अध्ययन

क्रम : १

समय : १:३० घण्टा

उद्देश्य : पर्यावरणीय अध्ययन क्या ? कैसे ?

तरीका : सर्वप्रथम प्रशिक्षक EVS के बारे में प्राथमिक प्रश्न करें जैसे–

- आमतौर पर EVS से क्या समझते हैं।
- क्या आसपास के वातावरण को हम EVS कह सकते हैं
- उत्तर को चार्ट पर अंकित करें।

फिर प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों को निर्देश दें कि – आइए बाहर चल कर हम किसी वृक्ष का सूक्ष्म अवलोकन करें। क्या–क्या देखा, एकत्र करें। अवलोकन व सूक्ष्म निरीक्षण करने के बाद सभी प्रतिभागियों से कुछ संभावित प्रश्न किया जाय (कक्ष में वापस आने के बाद)

(यदि आम का वृक्ष देखा हो तो)

- क्या आम के वृक्ष में खोखला था ?
- क्या कोई कीट पतंग वृक्ष पर था ?
- छाल का प्रयोग हम किस कार्य में करते हैं ?

संभावित उत्तर को चार्ट पर लिख लें, फिर उन्हीं प्रश्नों को मिलते जुलते प्रश्न करें। जैसे :

- जो जन्तु वृक्ष पर मौजूदा थे उसको हम और कहाँ–कहाँ देख सकते हैं ?
- पत्तियाँ कुछ पीली थी कुछ जाली समान हो गयी थीं ऐसा किस कारण से हुआ ?
- स्पष्टता के लिए दो ऐसी पत्ती रखना है जो पीली तथा जालीनुमा हो साथ ही साथ प्रशिक्षक प्रतिभागियों से कहें कि कुछ ऐसी बात जानकारी में लायें। जो अब तक किसी प्रतिभागी ने नहीं बताया हो।

चर्चा :

सभी चर्चा कर लेने के बाद चार्ट पर संभावित बिन्दु लिखेगा फिर प्रशिक्षक प्रतिभागियों से कुछ और प्रश्न करेगा।

- इसमें क्या EVS था ?
- इसमें सीखने के क्या अंश थे ?
- अवलोकन के दौरान इससे क्या सीख मिला ?

संभावित उत्तर को चार्ट पर लिखते जाय इस प्रकार से हम EVS क्या और कैसे और कहाँ संभावित हो सकता है।

✪✪✪✪

सत्रयोजना

पर्यावरण

क्रम : १

समय : १:३० घण्टा

उद्‌देश्य : पर्यावरणीय अध्ययन क्या/कैसे ?

तरीका : चर्चा, भ्रमण, अवलोकन, सार–संकलन

सामग्री : चर्चापत्र, पेन–पैड, पेड़ चार्ट, स्केचपेन आदि

प्रशिक्षक एक चार्ट पर नीचे लिखी बातें बिन्दुवार लिखेगा। उन पर प्रतिभागियों के बीच बड़े समूह में चर्चा करायेगा।

- इन दिनों हमारे स्कूलों में पर्यावरण किस रूप में पढ़ाया जाता है ?
- पर्यावरण को इस रूप में पढ़ाने में क्या कठिनाइयाँ आती हैं ?
- एक बच्चे के लिए पर्यावरण का क्या मतलब हो सकता है ?
- पर्यावरण का बच्चे के अनुभवों से क्या संबंध है ?
- बच्चों को स्कूल में पर्यावरण संबंधी कैसे अनुभव दिये जा सकते हैं ?
- पर्यावरण की कक्षा में शिक्षक और बच्चे के रिश्ते कैसे होने चाहिए ?
- पर्यावरण की मौजूदा पाठ्यपुस्तकों पर आपकी क्या राय है ? क्या वे पर्यावरण की समझ बनाने में बच्चों की मदद करती हैं ?

(समय ३० मिनट)

चर्चा के बाद कुछ समूह बनाये जायेंगे। प्रशिक्षक और प्रतिभागी मिल कर कक्ष से बाहर जाएंगे। परिस्थिति के अनुसार किसी एक पेड़ या अलग–अलग पेड़ों का अवलोकन करेंगे। (समय ३० मिनट) लौटकर सभी प्रतिभागी समूहवार बैठ जाएंगे। उनमें चर्चापत्र बाँटा जायेगा। हरेक समूह चर्चापत्र के बिन्दुओं पर चर्चा करके उत्तर लिखेगा।

(समय – १५ मिनट)

हर एक समूह – अपने उत्तर प्रस्तुत करेगा। बाकी–समूह उसकी समीक्षा– या जांच परख करेगें। प्रशिक्षक चर्चा में से उभरे निष्कर्षों को चार्ट पर नोट करता जाएगा।

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

प्रशिक्षक चाहे तो EVS इस सत्र को लंच से थोड़ा आगे–पीछे रख सकता है। ताकि प्रतिभागी उस समय का इस्तेमाल भी पेड़ का अवलोकन करने के लिए कर सकें।

चर्चापत्र : अनुभव पत्र

१. पेड़ के कितने हिस्से देख पाए ? कितने नहीं ?
२. पेड़ पर क्या क्या चीजें मौजूद थीं ? सजीव/निर्जीव ?
३. पेड़ के आस–पास और कौन–कौन से पेड़/वनस्पतियाँ थी ?
४. पेड़ के आस–पास क्या कोई आबादी है ? कैसी ?
५. उस पेड़ का उस आबादी से क्या संबंध है ? लोग उस पेड़ का क्या इस्तेमाल करते होंगे ? बच्चे/बड़े/बूढ़े/स्त्रियां ?
६. देखे गये गये पेड़ में क्या विशेषता है ?
७. उसके तने, पत्तियों के विन्यास में क्या खूबी है ? पत्तियों की अनुमानित लंबाई चौड़ाई लिखें।
८. पेड़ देखने से लेकर इस चर्चा तक की प्रक्रिया में – EVS की कौन–कौन सी प्रक्रियाएं सम्पन्न हुईं। क्रियावार उन्हें नाम दीजिए।
९. देखे गये पेड़ का एक चित्र बनाएं ।

सत्रयोजना

पर्यावरणीय अध्ययन

क्रम : २

समय : १:३० घण्टा

उद्‌देश्य : पर्यावरणीय अध्ययन की जानकारी व अन्य विषयों से संबंध।

तरीका : प्रशिक्षक –प्रशिक्षणार्थियों से प्रश्न पूछेंगे।

(उदाहरण+चर्चा)

- बर्फ कैसी होती है ?
- बर्फ कैसे बनती है ?
- और जब धीरे–धीरे पिघलती है तो क्या बन जाता है ?
- ऐसा किस कारण से होता है ?

साथ ही साथ बर्फ को प्रशिक्षण हाल में ले जाकर पानी बनने तक की क्रिया को दिखायेगें। संभावित उत्तर प्राप्त करने के बाद उसे चार्ट पर अंकित कर लेंगे फिर कहेगें–

कि क्या हवा, मौसम के ठंड, गर्म की पहचान हमें बर्फ के द्वारा प्राप्त हुयी (सूक्ष्म) रूप से क्या ये EVS से संबधित है।

इसी तरह से हमें EVS के बारे में और किन माध्यमो से जानकारी मिल सकती है किताब, आसपास से, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, परिचित परिवेश से। बाहर ग्रुप समूह में बाँटकर चर्चा करयेंगे इस प्रकार से हमारे किन–किन कौशल का विकास हुआ ?

- इसमें सूक्ष्म निरीक्षण की क्या चीज थी ?
- इसमें क्या जानकारी हासिल हुयी ?
- इसमें क्या सीख पायें ?

एक उदाहरण :

प्रशिक्षक कुछ शब्द प्रशिक्षार्थियों को देंगे उससे मिलाकर कहानी का निर्माण करना है। जैसे जंगल, मुर्गा घर, कुत्ता आदि जो कहानी बने उसमें से फिर प्रश्न पूछेंगें।

- क्या इसे हम भाषा से जोड़ सकते हैं ?
- इसमें क्या EVS भी था ?

इसी प्रकार से हम और शब्दों के माध्यम से कहानी का निर्माण कर सकेंगे।

- गणित में EVS को जोड़ने के लिए सोचने वाली कहानी, चित्र, का माध्यम ले सकते है। जैसे कहानी सुनाते वक्त कोई बच्चा किसी चीज के बारे में पूछें कि फलां जानवर की पूँछ ऐसी हो तो उस पर प्रश्न पूछकर उनकी कौन सी दक्षता का विकास करते हैं।

जैसे : वह खाता है।

कहाँ रहता है।

खत कैसे लिखते हैं।

- चित्र के माध्यम से पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ कितनी हैं – ४
- अगर इनमें से एक चिड़िया उड़ जाय तो कितनी चिड़िया बचेगी – ३
- अगर उसमें चार और चिड़याँ आ जायं तो कितनी होंगी – ७

ज्ञात से अज्ञात की ओर :

सायकिल की तीली का उदाहरण :

साइकिल के आगे चक्के में कितनी तीली होती है ? पिछले चक्के में कितनी तीलियां होती है ? (शायद न बता पायें तो सायकिल के ज्ञात भागों से अज्ञात की ओर ले जा सकते हैं ?)

इसी प्रकार से हम उन्हें ज्ञात चीजों की सूची बनाकर उसके बारे में चर्चा कर अज्ञात बिन्दु को ध्यान में रखने पर चर्चा करायेंगे।

✪✪✪✪

सत्र योजना

पर्यावरणीय अध्ययन

क्रम –३

विषय : कठिनाइयाँ एवं सम्भावित हल

तरीका : छोटे समूह में चर्चा व प्रस्तुतीकरण

प्रशिक्षक प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूह में बाँट देगा। प्रत्येक समूह को निर्देश देगा कि समूह के लोग आपस में चर्चा करके अपनी–अपनी कापी पर लिखेगें–

- EVS पढ़ाते समय कक्षा में कौन–कौन सी कठिनाइयाँ आ सकती है ?
- EVS का कोई अनुभव जब आपको कठिनाई आई हो ?
- उस कठिनाई को आपने कैसे हल किया ?
- इसी तरह अन्य कठिनाइयों के सम्भावित हल क्या हो सकते हैं ?

छोटे समूह में चर्चा के उपरान्त बड़े समूह में उन बिन्दुओं पर खुली चर्चा। चर्चा के दौरान जो भी बिन्दु आयेगा उसे चार्ट पर अंकित करते जायेंगे। यदि चर्चा के दौरान किसी प्रतिभागी द्वारा EVS की कठिनाइयों एवं सम्भावित हल पर कोई गतिविधि बताई जाती है तो प्रशिक्षक चर्चा को बीच में ही रोककर गतिविधि कराने का अवसर देगा।

✪✪✪✪

सत्र योजना

पर्यावरणीय अध्ययन

क्रम : ४

समय : १:३० घण्टा

विषय : "पर्यावरणीय अध्ययन" के लिये स्कूल योजना

तरीका : छोटे समूह में चर्चा व प्रस्तुतीकरण

प्रशिक्षक प्रतिभागियों को चार समूहों में बाँट देगा। प्रत्येक समूह को कुछ अपने–अपने समूह में चर्चा करने के लिए देगा। जैसे

- EVS की कक्षा को हम किस रूप में देखना चाहेगें।
- "पर्यावरणीय अध्ययन" पढ़ाने के लिये हमें क्या–क्या आना चाहिये।
- पर्यावरणीय अध्ययन बेहतर हो इसके लिये हमें किन–किन तरीकों/कौशलों का प्रयोग करना चाहिये।
- EVS के लिये भ्रमण व अवलोकन कितना जरूरी है।

चर्चा के उपरान्त प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जायेगा। प्रशिक्षक प्रतिभागियों से कहेगा EVS की कक्षा के लिऐ जिन बिन्दुओं को आवश्यक समझते हों तो उन्हें आप अपने M.O.T.M में लिख लीजिये।

✪✪✪✪

सत्र योजना

अनचाहे संदेश

क्रम : १

उद्देश्य (उपविषय) : बराबरी का अहसास न होना सीखने की प्रक्रिया में बाधक।

तरीका/विधि : प्रारम्भ में छोटे समूह में प्रतिभागियों से चर्चा। बाद में बड़े समूह में प्रतिभागियो ंके साथ खुली चर्चा।

चर्चाबिन्दु :

अध्यापक कथन

बहुत से ऐसे अवसर हमारे और आपके जीवन में आये होंगे जब हमें अहसास हुआ होगा कि हमारे साथ बराबरी का व्यवहार नहीं किया जा रहा है। एक बार मेरे साथ घटी घटना का विवरण प्रस्तुत है –"एक बार मैं अपने बड़े अधिकारी से मिलने गया, तो मुझे बहुत देर तक बाहर दरवाजे पर खड़ा रहना पड़ा। अन्दर बुलाये जाने पर बैठने के लिए नहीं कहा गया।"

आप भी अपने बचपन की कोई ऐसी घटना सुनाइये जहाँ आपको लगा हो कि मेरे साथ कक्षा में या उसके बाहर बराबरी का व्यवहार नहीं दिया जा रहा है।

(कुछ प्रतिभागियों को घटना सुनाने का अवसर दिया जायेगा)

- क्या प्रशिक्षण में भी ऐसा हो सकता है कि किसी को बराबरी का मौका न मिले ?
- यदि नहीं मिलता होतो प्रशिक्षणार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- किन अवसरों पर हम किन बच्चों को कक्षा में या उसके बाहर बराबरी का मौका नही देते ?
- जाने अनजाने में हम कैसे संदेश उन तक पहुँचाते है ?
- बराबरी का अहसास न होने पर बच्चे के मन मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
- क्या सीखने के लिए आत्मविश्वास का होना जरूरी है ?
- क्या बच्चे के आत्मविश्वास में कमी तो नहीं आती ?
- क्या यही अहसास बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में बाधक है ?

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- आये हुए बिन्दुओं को चार्ट पर अंकित करते जायेंगे।
- चर्चा ऐसे चलायें कि किसी को चोट न लगे।
- अपने पास ठोस उदाहरण रखें।
- किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप न करें।

सत्रयोजना

अनजाने संदेश

क्रम : २

समय : ४५ मिनट

उद्देश्य/उपविषय : बराबरी का अहसास दिलाने में शिक्षक की भूमिका।

तरीका/विधि : चर्चा।

चर्चाबिन्दु :

प्रशिक्षक प्रतिभागियों से कहेगा – मान लीजिये कि मैं एक ऐसा शिक्षक हूँ जो कक्षा में बराबरी का व्यवहार नहीं करता। जैसे–किसी धीमे सीखने वाले बालक को बार–बार यह अहसास कराना कि पढ़ना या गणित लगाना तुम्हारे वश की बात नहीं। ऐसी स्थिति में आप सुझाव दीजिये कि मैं क्या करूँ जिससे सभी बच्चे बराबरी का अहसास करें। (१० मिनट का समय प्रतिभागियों को सोचने के लिए दें)

चर्चा करें कि –

- इसी तरह बराबरी का अहसास दिलाने के लिये आप अपनी कक्षा में क्या करेंगे ?
- यदि आपको अपने लिये कोई सुझाव जरूरी लगता है तो उसे आप अपनी **MOTM** में लिख लीजिए।

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

- जो बिन्दु आयेगें उन्हें चार्ट पेपर पर अंकित करते जायेंगे।
- फिर प्रतिभागियों से कहेंगे कि इसी तरह बराबरी का अहसास दिलाने के लिये आप अपने कक्षा में क्या करेंगे ?
- कक्षा के कुछ ठोस उदाहरण अपने पास रखें।

✪✪✪✪

सत्र योजना

विद्यालय विकास

क्रम : १

समय : ३० मिनट

उपविषय : विद्यालय का वर्तमान स्वरूप।

तरीका : बड़े समूह में चर्चा।

चर्चाके बिन्दु : आपके पास–पड़ोस के विद्यालय का वर्तमान स्वरूप कैसा है ?

प्रशिक्षक के लिये सुझाव : चर्चा के दौरान विद्यालयों को निम्नलिखित श्रेणियों मे प्रतिभागियों के सहमति के आधार पर बाँटा जाये।

- सीमित संसाधन सीमित उपलब्धि
- अधिक संसाधन सीमित उपलब्धि
- सीमित संसाधन अधिक उपलब्धि
- अधिक संसाधन अधिक उपलब्धि

प्रत्येक बिन्दु पर सार्थक चर्चा की जाये। चर्चा में इस बात पर भी फोकस रहेगा कि यदि शिक्षक चाहे तो जटिल परिस्थितियों में भी बदलाव ला सकता है। प्रतिभागियों के बीच उभरने वाली बातें जैसे – शिक्षक की भूमिका, समुदाय की भूमिका और विभाग की भूमिका पर आधारित कारणों को श्रेणीबद्ध कर लिया जाये।

✪✪✪✪

सत्र योजना

विद्यालय विकास

क्रम : २

समय : ६० मिनट

उपविषय : विद्यालय में बदलाव जो हम चाहते हैं।

तरीका : छोटे समूह में चर्चा और उसकी प्रस्तुति।

चर्चा बिन्दु :

- शिक्षकों की भूमिका
- समुदाय की भूमिका
- बच्चों की भूमिका
- विभाग की भूमिका

प्रशिक्षक के लिए सुझाव :

बड़े समूह को छोटे समूहों में बाँट कर एक एक बिन्दु प्रत्येक समूह को दिया जाएगाऔर अपने अपने समूह में चर्चा के बाद शिक्षकों,समुदाय, बच्चों, विभाग की भूमिका पर सहमति बनेगी, जिसे चार्ट पर लिखा जाये।

इस बात पर विशेष बल दिया जाये कि बहस, शैक्षणिक गुणवत्ता अर्थात् कक्षा के अन्दर होने वाली गतिविधियों पर अधिक केन्द्रित हो।

चर्चा में विद्यालय विकास की प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं पर भी ध्यान दिया जाये। इस चर्चा के बाद सभी प्रतिभागियों से उनके अपने विद्यालयों के लिये कार्ययोजना बनवाकर ले ली जाये। इस बात को साफतौर पर बता दिया जाये कि इस कार्ययोजना के क्रिन्यावयन को प्रशिक्षण के फॉलोअप के समय कक्षा में जाँचा परखा जायेगा।

✪✪✪✪

सत्र योजना

मूल्यांकन

क्रम : १

समय : १:३० घण्टा

उपविषय : ▪ मूल्यांकन का वर्तमान स्वरूप कैसा है ?
▪ वास्तव में मूल्यांकन कैसा हो ?

तैयारी : ▪ छोटे समूह में बाँटना (१० मि.)
▪ चार्ट पेपर, स्केच पेन, मार्कर (या और कुछ जो प्रशिक्षक चाहे)
(प्रशिक्षक सुविधानुसार समय का बँटवारा कर ले लेकिन उभारने वाले पक्षों पर अधिक समय लगायें।)

तरीका : छोटे समूह में मस्तिष्क मंथन द्वारा विचार एकत्र करना (२० मिनट)

प्रशिक्षक के लिये : सभी समूहों से प्राप्त विचारों को चर्चा बिन्दुओं के आधार पर चार्ट पर वर्गीकृत कर लें। बाद में बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण करायें।

चर्चा बिन्दु :

- क्या वर्तमान परीक्षा प्रणाली बच्चे का समग्र मूल्यांकन करती है ?
- क्या वर्तमान मूल्यांकन बच्चों की निजी आावश्यकताओं का आकलन करता है ?
- क्या इससे (वर्तमान मूल्यांकन) बच्चों के सभी कौशलों का मूल्यांकन हो पाता है ?
- क्या मूल्यांकन और परीक्षा दो अलग–अलग बातें नहीं हैं ?
- क्या वर्तमान मूल्यांकन पद्धति बच्चों में परीक्षा के प्रति डर पैदा नहीं करती ?
- आज के मूल्यांकन के तौर तरीके प्रक्रिया आधारित हैं या परिणाम आधारित ?
- क्या बच्चे पर आज की परीक्षा व्यवस्था गहरा मानसिक दबाव नहीं डालती ?
- बच्चे परीक्षा के नाम से डर जाते हैं जिसमें होता है –
    - पूरे पाठ्यक्रम का एक साथ पूछे जाने सम्बन्धी भय
    - पूरा उत्तर लिख सकने सम्बन्धी भय
    - मौखिक परीक्षा में अभिव्यक्ति सम्बन्धी भय

निष्कर्ष रूप में बड़े समूह में प्रश्न पूछा जा सकता है –

- तो फिर अब मूल्यांकन का क्या स्वरूप होना चाहिए ?

प्रशिक्षक के लिए :

समूह से प्राप्त विचारों को एकत्र कर वर्गीकृत करके एक चार्ट पर चर्चा बिन्दुओं के अनुसार लिख लें फिर सभी प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से बैठा कर कहें कि अब हम आपकी परीक्षा लेंगे। सभी अपनी कापी–पेन लेकर तैयार होकर बैठ जाएं। वक्तव्य कुछ इस पैनेपन व कठोरता से कहेंगे कि भय उत्पन्न होने की स्थिति बन जाए। फिर कुछ कठिन से प्रश्न पहले से ही चार्ट पर लिख कर लाएं और टाँग दें। प्रश्न ऐसे हो सकते हैं –

प्रश्नपत्र

पूर्णांक : १०

नोट :– सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिये समय २ मिनट है तथा सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

१. अधिगम के ज्ञानात्मक एवं संज्ञानात्मक पक्षों का सही आकलन कैसे किया जा सकता है ?
२. पुनरावृत्ति एवं पुनर्वलन के प्रमुख सम्बोधों को भली–भाँति समझने हेतु कौन–कौन से क्रिया–कलाप कराये जाने चाहिये ?
३. अधिगम के दौरान छात्रों में अनुक्रिया की स्वीकृति एवं सुधार के प्रति समझ एवं सजगता कैसे उत्पन्न करें ?
४. २१ में २ का भाग बच्चे से कैसे करवायेंगे ? समझाइये।
५. बच्चों में भाषा की विशेष समझ कब, कैसे तथा कितने चरणों में विकसित होती है ?

विशेष : इस के पश्चात् सभी प्रतिभागियों की प्रत्येक गतिविधि को गहन व सूक्ष्म दृष्टि से देखते रहें क्योंकि इसी स्थिति व उत्पन्न भय को लेकर ही आगे चर्चा करनी है और उसे बच्चों में परीक्षा के नाम से व्याप्त भय से जोड़ना है।

प्रश्नों का उत्तर लिखने के लिए एक न्यूनतम समय निर्धारित कर दें, और बीच–बीच में कहते रहें, कि जल्दी करें समय खत्म होने वाला है। समय समाप्ति की घोषणा करके आप सभी की कॉपियाँ एकत्र करके उन्हें देखें और उपेक्षा/प्रशंसा के भाव के साथ अपनी टिप्पणी दें। उसका प्रभाव भी देखें। इसके बाद चर्चा करें।

- क्या आप इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर लिख पाये ?
- जब आपसे परीक्षा के लिए कहा गया तब आपको कैसा लगा। क्यों ?
- क्या अभी आपका किया गया मूल्यांकन सही मूल्यांकन है ?
- क्या ऐसी परीक्षायें लेकर हम बच्चे का सही मूल्यांकन (जाँच परख) कर पाते हैं ?
- आखिर हम मूल्यांकन से हासिल क्या करना चाहते हैं ?

चर्चा में इन बिन्दुओं को उभारना उपयुक्त होगा –

- मूल्यांकन भी पाठ्यक्रम का एक अंग है।
- मूल्यांकन का उद्‌दश्ेय भय उत्पन्न करना नहीं बल्कि बच्चे में उत्पन्न कौशलों का पता लगाना है।
- मूल्यांकन केवल बालक का ही नहीं, बल्कि खुद शिक्षक का, उसके द्वारा अपनाये तरीकों /प्रक्रियाओं का भी होता है।
- मूल्यांकन सिर्फ मात्रात्मक (अंक, श्रेणी प्रधान) न हो कर गुणवत्ता परख भी हो।
- मूल्यांकन केवल संज्ञानात्मक पक्षों तक सीमित होकर न रहे। उसमें भावनात्मक और व्यवहारगत पक्षों का भी होना जरूरी है।

✪✪✪✪

सत्र योजना

मूल्यांकन

क्रम : २

समय : १:३० घंटा

उपविषय :
- मूल्यांकन कैसे हो ? – इसकी समझ विकसित करना।
- कक्षा में मूल्यांकन कैसे करें, तय करना/पहचानना/योजना बनाना।

सामग्री : चार्ट, स्केचपेन आदि।

तैयारी : गतिविधि का चुनाव।

गतिविधि का नाम : "चित्र पर आधारित कहानी बनाना" (५–७ मिनट)।

तरीका : वर्णमाला के किसी वर्ण की जानकारी प्रतिभागियों से करें और उस वर्ण से आरम्भ होने वाले नाम के प्रतिभागियों से प्रस्तुतीकरण करायें।

कुल समय : १० मिनट

गतिविधि के लिए सुझाव : चार्ट पर अस्पष्ट/असम्बद्ध चित्र टाँगे जाँय और उन चित्रों को पहचान कर कहानी बनाने के लिए कहा जाय। कहानी ऐसी हो जो कि चित्रों के विभिन्न वस्तुओं/पात्रों तथा दृश्यों को स्पष्ट करती है।

चर्चा बिन्दु (३० मिनट)

- **इस गतिविधि से किन–किन कौशलों का मूल्यांकन सम्भव है ?**
- **क्या इस गतिविधि से मूल्यांकन ही हो रहा है अथवा किन्हीं कौशलों का विकास भी ?**
- **क्या पारम्परिक परीक्षा पद्धति का दबाव इस मूल्यांकन गतिविधि में भी अनुभव किया गया ?**
- **क्या कक्षा में भी ऐसी मूल्यांकन गतिविधि करायी जा सकती है ?**
- **क्या ऐसी मूल्यांकन गतिविधि का कोई ढाँचा आप सुझा सकते हैं ?**
- **क्या ऐसी गतिविधि भाषा, गणित, E.V.S. तीनों विषयों का मूल्यांकन करने के लिए बनायी जा सकती है ? कैसे ?**

इस गतिविधि द्वारा–
- मौलिकता
- कल्पनाशीलता
- सृजनशीलता
- भाषा कौशल एंव सौंदर्य
- अभिव्यक्ति
- आत्मविश्वास, आदि गुणों का मूल्यांकन किया जा सकता है।
- इस गतिविधि को छोटे समूह में बाँटकर अलग–अलग चित्र देकर भी कराया जा सकता है।

एक अन्य उदाहरण– कक्षा के लिए

कक्षा के प्रत्येक बच्चे कम से कम चार साथियों के विवरण एकत्र करे।

विवरण में साथियों तथा उनके पिता के नाम, परिवार के अन्य सदस्यों के नाम, सदस्यों की संख्या तथा उनके घर की स्थिति के ब्यौरे अंकित करें।

साथियों के पिता की मासिक आय अथवा उनको मिलने वाले प्रतिदिन जेब खर्च को घटते क्रम में लिखें। उनका योग भी करें।

- यदि चार साथियों में से किसी एक को अपना मित्र बनाना हो तो किसे चुनेंगे, लिखें। इस साथी को ही अपना मित्र क्यों बनायेंगे, कारण दें।
- प्रतिभागी सोचें कि इस गतिविधि से बच्चों के किन कौशलों का मूल्यांकन हो सकेगा ?

चर्चा बिन्दु : ६–७ के छोटे समूह में बाँटकर निम्न बिन्दुओं पर २० मिनट तक चर्चा कराएँ –

१. मूल्यांकन का रिकार्ड रखना जरूरी क्यों ?
२. जिन दक्षताओं का मूल्यांकन किया जा रहा है उसका रिकार्ड कैसे रखें ?
३. मूल्यांकन कब–कब (साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक) किया जाए ?
४. मूल्यांकन में अंक, ग्रेड/रैंक में से क्या दिया जाए ?
५. बच्चों की उपलब्धियों को उन्हें बताने का क्या स्वरूप होगा ?
६. रिकार्ड रखने में किन–किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होगा ?

प्रशिक्षक के लिए :

बड़े समूह में उपरोक्त बिन्दुओं का छोटे ग्रुपों द्वारा प्रस्तुतीकरण कराया जाय (२० मिनट) प्रत्येक बिन्दु पर उनके विचार अलग–अलग चार्ट पर बिन्दुवार अंकित किये जाएँ। प्रथम दो समूह से पूरे विचार लिए जायें। शेष समूहों से छूटी हुई नई बातें ही जोड़ने के लिए कहा जाय।

उभारने योग्य बिन्दु

- मूल्यांकन का उद्देश्य गलतियों का अहसास कराना नहीं बल्कि सुधार के मौके देना है।
- मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया का एक जरूरी भाग है।
- मूल्यांकन से पास फेल करना नहीं बल्कि कमियों/विशेषताओं का पता लगाना है।
- कक्षा/परिवेश में परिचित सामग्रियों के माध्यम से मूल्यांकन हो। परिभ्रमण को भी इसमें शामिल करें।
- मौखिक अभिव्यक्ति मूल्यांकन का जरूरी हिस्सा हो।

प्रशिक्षक इन बिन्दुओं पर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित करे। मूल्यांकन की प्रक्रिया केवल यहीं पर समाप्त नही हो जाती है। अवलोकन करके सभी पक्षों का "रिकार्ड" रखा जाना चाहिए। जिससे उनका विश्लेषण किया जा सके। यही विश्लेषण हमें बच्चों के बारे में निर्णय लेने और आगे की योजना बनाने में सहायता करता है।